

१. नवकार महामंत्र

नमो अरिहंताणं.

नमो सिद्धाणं.

नमो आयरियाणं.

नमो उवज्झायाणं.

नमो लोए सव्व-साहूणं.

एसो पंच-नमुक्कारो, सव्व-पाव-प्पणासणो;

मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं.

शब्दार्थ :-

नमो उ नमस्कार हो

अरिहंताणं उ अरिहंत भगवंतों को

सिद्धाणं उ सिद्ध भगवंतों को

आयरियाणं उ आचार्य भगवंतों को

उवज्झायाणं उ उपाध्याय भगवंतों को

लोए सव्व-साहूणं उ लोक में रहे हुए सर्व साधु भगवंतों को

1. navakāra mahāmantra

namo arihantāṇam.

namo siddhāṇam.

namo āyariyāṇam.

namo uvajjhāyāṇam.

namo loe savva-sāhūṇam.

eso pañca-namukkāro, savva-pāva-ppaṇāsaṇo;

maṅgalāṇam ca savvesim, paḍhamam havai maṅgalam.

Literal meaning :-

namo = be obeisance

arihantāṇam = to the arihanta bhagavantas

siddhāṇam = to the siddha bhagavantas

āyariyāṇam = to the ācārya bhagavantas

uvajjhāyāṇam = to the upādhyāya bhagavantas

loe savva-sāhūṇam = to all the sādhu bhagavantas present in the universe

लोए उ लोक में रहे हुए, सव्व उ सर्व, साहूणं उ साधु भगवंतों को
 एसो पंच-नमुक्कारो उ यह पंच नमस्कार / इन पाँचों को किया हुआ नमस्कार
 एसो उ यह, पंच उ पंच, नमुक्कारो उ नमस्कार
 सव्व-पाव-प्पणासणो उ सर्व पापों का नाश करने वाला है
 पाव उ पापों का, प्पणासणो उ नाश करने वाला है
 मंगलाणं च सव्वेसिं उ और सर्व मंगलों में
 मंगलाणं उ मंगलों में, च उ और, सव्वेसिं उ सर्व
 पढमं हवइ मंगलं उ प्रथम मंगल है
 पढमं उ प्रथम, हवइ उ है, मंगलं उ मंगल
 गाथार्थ :-
 अरिहंत भगवंतों को नमस्कार हो.
 सिद्ध भगवंतों को नमस्कार हो.
 आचार्य भगवंतों को नमस्कार हो.
 उपाध्याय भगवंतों को नमस्कार हो.
 लोक में रहे हुए सर्व साधु भगवंतों को नमस्कार हो.

loe = present in the universe, savva = to all, sāhūṇam = the sādhu bhagavantas
 eso pañca-namukkāro = these five obeisance / the obeisance performed to these five
 eso = these, pañca = five, namukkāro = obeisance
 savva-pāva-ppaṇāsaṇo = is an annihilator of all sins
 pāva = of sins, ppaṇāsaṇo = is an annihilator
 maṅgalāṇam ca savvesim = and among all auspices
 maṅgalāṇam = among auspices, ca = and, savvesim = all
 paḍhamam havai maṅgalam = is the most auspicious deed
 paḍhamam = the most, havai = is, maṅgalam = auspicious deed
 Stanzaic meaning :-
 Be obeisance to the arihanta bhagavantas.
 Be obeisance to the siddha bhagavantas.
 Be obeisance to the ācārya bhagavantas.
 Be obeisance to the upādhyāya bhagavantas.
 Be Obeisance to all the sādhu bhagavantas present in the universe.

इन पाँचों को किया हुआ नमस्कार सर्व पापों का नाश करने वाला है और सर्व मंगलों में इयह नमस्कारट प्रथम मंगल है..... १.

विशेषार्थ :-

पंच परमेष्ठी :- अरिहंत और सिद्ध— दो प्रकार के देव एवं आचार्य, उपाध्याय और साधु— तीन प्रकार के गुरु— ये पाँच परमेष्ठी परम पूज्य हैं.

पंच परमेष्ठी के १०८ गुण :- अरिहंत के बारह, सिद्ध के आठ, आचार्य के छत्तीस, उपाध्याय के पच्चीस एवं साधु के सत्ताईस— सर्व मिलाकर पंच परमेष्ठियों के १०८ गुण होते हैं.

परमेष्ठी उ परम पद पर स्थित / छट्ठे आदि गुण-स्थानकों द्वारा उच्च कक्षा को प्राप्त की हुई आत्माएं.

अरिहंत उ कर्म रूपी आंतर शत्रुओं को नाश करके वंदन-पूजन-सत्कार तथा सिद्धि-गमन के योग्य बने व्यक्ति. सभी तीर्थकर भगवंत अरिहंत, जिनेश्वर व सर्वज्ञ होते हैं. यहां पर अरिहंत शब्द का प्रयोग तीर्थकर भगवंत के लिए किया है.

तीर्थकर उ साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका रूप चतुर्विध संघ इतीर्थट

Obeisance performed to these five is an annihilator of all sins and [this obeisance] is the most auspicious deed among all the auspices. 1.

Specific meaning :-

pañca parameṣṭhī :- The **arihanta** and the **siddha**— two types of gods and the **ācārya**, the **upādhyāya** and the **sādhū**— three types of preceptors-- these five **parameṣṭhīs** are most highly venerable.

108 qualities of five parameṣṭhīs :- The **arihanta** have twelve, the **siddha** have eight, the **ācārya** have thirty six, the **upādhyāya** have twenty five and the **sādhū** have twenty seven-- in all the five **parameṣṭhīs** have one hundred and eight qualities.

parameṣṭhī = Present in the highest position / souls having attained the highest position through **guṇa-sthānakas** like sixth.

arihanta = Person having become worthy of obeisance, worship, honour and attainment of salvation by annihilating internal enemies prevailing in the form of **karma**. All **tīrthaṅkara bhagavantas** are **arihanta**, **jineśvara** and **sarvajña**. Here the word **arihanta** is used for **tīrthaṅkara bhagavanta**.

tīrthaṅkara = kevalī, the establishers of four-fold congregation [**tīrtha**] of **sādhū**,

की स्थापना करने वाले **केवली**.
तीर्थ उ भव समुद्र को पार करने के लिए परम आलंबन रूप नाव.
जिनेश्वर उ इंद्रियों को जीतने वाले संपूर्ण दश **पूर्वधर**, चौदह **पूर्वधर**, अवधि **ज्ञानी**, मनः-पर्यव **ज्ञानी** और केवल **ज्ञानी साधुओं** में श्रेष्ठ.
सर्वज्ञ / केवली / केवल ज्ञानी उ सर्व पदार्थों के तीनों काल झ्रूत, वर्तमान और भविष्य के सर्व गुण एवं पर्याय को साक्षात् जानने और देखने वाले.
सिद्ध उ सर्व **कर्मों** का संपूर्णतया नाश करके शुद्ध स्वरूप झ्रूत को प्राप्त आत्मा.
आचार्य उ साधु समुदाय **झाच्छट** के अधिपति.
उपाध्याय उ सम्यग्ज्ञान और क्रियाओं का अभ्यास कराने वाले **साधु**.
साधु उ मोक्ष मार्ग की साधना करने वाले पंच महाव्रतधारी व्यक्ति.
लोक / मनुष्य लोक / ढाई द्वीप उ जंबू द्वीप, धातकी खंड एवं अर्ध **पुष्कर-वर द्वीप**.
गुणस्थानक उ आत्मा के क्रमिक विकास का परिचायक मानदंड / आत्मा की मोक्ष की ओर उन्नति सूचक अवस्था.
कर्म उ शुभाशुभ प्रवृत्ति के अनुसार आत्मा के साथ बंधने वाले **कर्म** पुद्गलों

sādhvī, śrāvaka and śrāvikā.
tīrtha = A great support like a boat to cross over the ocean of life.
jineśvara = The best / highest amongst **sādhus** conquering sense organs, having the knowledge of complete ten **pūrvas**, fourteen **pūrvas**, **avadhi jñānī**, **manah-paryava jñānī** and **kevala jñānī**.
sarvajña / kevalī / kevala jñānī [omniscient] = One acquainted with and viewing all the qualities and states [modifications] of all the three periods [past, present and future] of all matters perceptibly.
siddha = Soul having attained the perfect form [salvation] by annihilating all the **karmas** completely.
ācārya = Head of the group of **sādhus [gaccha]**.
upādhyāya = **sādhū** teaching right knowledge and rites [practices].
sādhū = Person observing five great vows endeavouring in the path of salvation.
loka / human world / two and a half islands = **jambū dvīpa, dhātakī khaṇḍa** and half **puṣkara-vara dvīpa** [island].
guṇasthānaka = A standard indicating gradual uplift of the soul / stage indicating the progress of the soul towards salvation.
karma = Group of atoms of **karma** attaching to the soul according to pious or

की वर्गणा इत्समूहट.
मंगल उ अनिष्ट निवारक और इष्ट प्राप्त कराने वाला साधन.
छः प्रकार के आंतर शत्रु :-
 १. **इंद्रिय उ** अप्रशस्त भाव में प्रवृत्त पाँच इंद्रियाँ;
 २. **विषय उ** इंद्रियों के अनुकूल पदार्थों के प्रति रुचि;
 ३. **कषाय उ** क्रोधादि मानसिक भाव;
 ४. **परीषह उ** भूख-प्यासादि का अनुभव;
 ५. **वेदना उ** शारीरिक और मानसिक सुख-दुःख का अनुभव;
 ६. **उपसर्ग उ** मनुष्य, तिर्यच या देवताओं द्वारा कृत मन को आकुल-
 व्याकुल करने वाले उपद्रव.
तीर्थकर के चौतीस अतिशय इष्टविशिष्ट गुणत :-
 ♦ **चार अतिशय जन्म से-**
 १. **तीर्थकर** का दिव्य शरीर अद्भुत रूप वाला सुगंध से युक्त, नीरोगी,
 पसीना रहित एवं मैल रहित होता है.
 २. श्वासोच्छ्वास सुगंधी होता है.
 ३. रक्त और मांस श्वेत व दुर्गंध रहित होते हैं.

evil practices [good or bad activities].
maṅgala = Mean for avoiding calamities and helping to attain the desired results [objectives].
Six types of āntara śatru [internal enemies] :-
 1. **indriya [sense organs]** = Five sense organs absorbed in evil mental activities;
 2. **viṣaya [objects of pleasure]** = Liking for the objects to sense organs;
 3. **kaṣāya [passions]** = Mental tendency like anger;
 4. **pariṣaha [sufferings]** = Feelings like hunger, thirst;
 5. **vedanā [feelings]** = Feelings of physical and mental happiness and sorrow;
 6. **upasarga [troubles]** = Sufferings brought about by human beings, animals or divine beings disturbing and upsetting the mental peace.
Thirty four atīśayas [special qualities] of the tīrthaṅkara :-
 ♦ **Four atīśayas from birth-**
 1. The divine body of the **tīrthaṅkara** will be of splendid appearance, with fragrance, healthy, without sweat and without dirt.
 2. The respiration will be fragrant.
 3. Blood and flesh will be white and free from odour.
 4. Diet and excretion will be invisible.

४. आहार-नीहार झमल-मूत्र का त्यागट अदृश्य रूप से होता है।

◆ ग्यारह अतिशय केवल ज्ञान प्राप्त होने से-

१. एक योजन प्रमाण क्षेत्र में एक कोटा-कोटि इ० क्रोड ७ १ क्रोडट देव, मनुष्य और तिर्यच पंचेंद्रियों का समावेश संकडाश के बिना हो सकता है।

२. पैंतीस गुणों से युक्त अर्धमागधी वाणी एक योजन दूर तक देव, मनुष्य और तिर्यचों की भाषा में सुनाई देती है।

३. मस्तक के पीछे भामंडल होता है।

४-११. एक सौ पच्चीस योजन प्रमाण क्षेत्र में प्रायः रोग, वैरभाव, ईति झसात प्रकार के महाभयट, मारी, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, राज भय नष्ट हो जाते हैं।

◆ उन्नीस अतिशय देवताओं द्वारा कृत-

१. धर्म-चक्र आकाश में साथ साथ चलता है।

२-५. चामर, सिंहासन, छत्र-त्रय एवं ध्वजा हमेशा साथ में रहते हैं।

६. चलते समय पांवों के नीचे नव सुवर्ण कमल होते हैं। झ्वरणों के नीचे दो, चार आगे और तीन पीछे।

७. सुवर्ण, रौप्य झचांटी और रत्न के तीन गड झकिल्लेट होते हैं।

◆ Eleven atisāyas appearing on acquiring kevala jñāna-

1. One multi-crore [1 crore x 1 crore] of heavenly gods, human beings and animals with five organs can accommodate without shortage of space in an area of one **yojana**.

2. Speech having thirty five qualities is being heard to an extent of one **yojana** in the languages of **ardhamāgadhi**, gods, human beings and animals.

3. **bhāmaṇḍala** [aureola] is present behind the head.

4-11. Mostly diseases, enmity, calamity [seven types of great fears], plague, excessive rains, droughts, famine and political fears disappear within an area of one hundred and twenty five **yojanas**.

◆ Nineteen atisāyas done by the heavenly gods-

1. **dharmacakra** [wheel of **dharma**] move along in the sky.

2-5. **cāmara** [whisk], **siṃhāsana** [throne], **chatra-traya** [three umbrellas] and **dhvajā** [flag] always remain along with.

6. Nine golden lotus flowers are present below the feet while walking. [Two below, four before and three behind the feet].

7. Three forts of gold, silver and jewellery are present.

8. Four faced **samavasaraṇa** will be present.

<p>८. चतुर्मुख समवसरण होता है. ९. अशोक वृक्ष होता है. १०. चलते समय कांटे अधो-मुख हो जाते हैं. ११. वृक्ष पूर्णतया नम जाते हैं. १२. देशना देते समय देव दुंदुभि बजाते हैं. १३. पवन अनुकूल हो जाता है. १४. पक्षी प्रदक्षिणा देते हैं. १५. सुगंधी जल की वर्षा होती है. १६. पुष्प वृष्टि होती है. १७. दीक्षा लेने के बाद केश, दाढ़ी, मूंछ और नख बढ़ते नहीं है.</p> <p>१८. चार प्रकार के देवों में से कम से कम एक क्रोड़ देवता हमेशा साथ रहते हैं. १९. सभी ऋतु अनुकूल हो जाती हैं.</p> <p>योजन उ जैन शास्त्र के अनुसार दूरी मापने का एक प्रकार का प्राचीन कालीन मान.</p> <p>अरिहंत के बारह गुण :- १. अशोक वृक्ष उ तीर्थंकर भगवंत के शरीर से बारह गुणा ऊंचा वृक्ष</p>	<p>9. aśoka tree will be present. 10. Thorns faces downwards while walking. 11. Trees bow down completely. 12. Gods beats the divine drums while giving discourses [sermon]. 13. Wind becomes favourable. 14. Birds circumambulates. 15. Fragrant water is showered. 16. Flowers are showered. 17. Hair, beard, moustache and nails do not grow after renunciation of worldly life. 18. At least one crore deities out of four types of gods always remain along with.</p> <p>19. All seasons become favourable.</p> <p>yojana = A standard of ancient period for measuring distance according to jain scriptures.</p> <p>Twelve qualities of the arihanta :- 1. aśoka vṛkṣa [<i>Jonesia asoka tree</i>] = Gods create tree twelve times the height of the body of tīrthaṅkara bhagavanta in the samavasaraṇa.</p>
--	--

देवता समवसरण में रचते है.

२. सुर पुष्प वृष्टि उ देवता एक योजन प्रमाण समवसरण भूमि में जानु प्रमाण सुगंधी पुष्पों की वृष्टि करते हैं.

३. दिव्य ध्वनि उ देवता भगवंत की वाणी में संगीतमय सूर पूरते है.

४. चामर उ देवता भगवान को रत्न जडित स्वर्णमय चामर ढुलाते झ्र्नीझते हैं.

५. सिंहासन उ भगवंत को बैठने के लिये देवता रत्न जडित स्वर्णमय सिंहासन रचते हैं.

६. भामंडल उ भगवंत के मस्तक के पीछे देवता आभा मंडल रचते हैं, जिसमें भगवंत के मुख के तेज का संवरण झ्र्संक्रमण्ट हो जाता है. झ्रेसा करने से ही भगवंत का मुख-दर्शन हो सकता है.ट

७. देव दुंदुभि उ देवता दुंदुभि बजाते हैं.

८. छत्र-त्रय उ देवता भगवंत के मस्तक पर तीन स्वर्णमय रत्न जडित छत्र रचते हैं.

झ्ररुपर के आठ गुण तीर्थकर के अष्ट प्रातिहार्य हैं जो केवलज्ञान होने के बाद हमेशा साथमें रहते हैं.ट

९. अपायापगमातिशय उ भगवान के विचरण क्षेत्र के १२५ योजन तक

2. sura puṣpa vṛṣṭi = Gods shower fragrant flowers upto the knees in one **yojana** area of the **samavasaraṇa**.

3. divya dhvani = Gods tunes the musical sound in the sermon of the **bhagavanta**.

4. cāmara = Gods whisks [swings] the golden whisk studded with jewellery to the **bhagavanta**.

5. siḥāsana = Gods makes golden throne studded with jewellery for sitting of the **bhagavanta**.

6. bhāmaṇḍala = Gods create an aureola behind the head of the **bhagavanta**, in which the brightness of the face of the **bhagavanta** is transited. [The face of the **bhagavanta** can be seen only if done so].

7. deva dundubhi = Gods sounds the divine drums.

8. chatra-traya = Gods create three divine golden umbrellas studded with jewellery over the head of the **bhagavanta**.

[Above eight qualities are eight **prātihārya** of the **tīrthaṅkara** which remain always along with after attaining absolute perfect knowledge (omniscience).]

9. apāyāpagamātīśaya = Generally excessive rains, droughts and all sorts of diseases disappears within an area of 125 **yojanas** of moving about of the

अतिवृष्टि, अनावृष्टि तथा सर्व रोग प्रायः मिट जाते हैं. **अपाय उ** उपद्रव, **अपगम उ** नाश.

१०. ज्ञानातिशय उ तीर्थकर द्वारा समझाने पर किसी भी जीव को अपनी शंका का समाधान अवश्य हो जाता है.

११. पूजातिशय उ इंद्र, देव, **चक्रवर्ती**, **बलदेव**, **वासुदेव**, महाराजा, मनुष्य, तिर्यच पंचेंद्रिय आदि सभी **तीर्थकर भगवंत** की पूजा करते हैं.

१२. वचनातिशय उ पैंतीस गुणों से युक्त **भगवंत** की वाणी देव, मनुष्य और तिर्यच पंचेंद्रिय अपनी अपनी भाषा में समझ लेते हैं.

अतिशय उ आश्चर्य जनक गुण जो **तीर्थकर** के सिवाय विश्व के अन्य किसी भी जीव में नहीं होता है.

तीर्थकर भगवंत की वाणी के पैंतीस गुण :-

१. वाणी व्याकरण के नियम से युक्त होती है.
२. वाणी ऊंचे स्वर में होती है.
३. वाणी व्यवस्थित और शिष्ट होती है.
४. वाणी मेघ की तरह गंभीर होती है.
५. वाणी प्रतिध्वनि वाली होती है.

bhagavāna [apāya = disturbances; **apagama** = destruction].

10. jñānātiśaya = One's own doubts are solved certainly on presentation to any of the living being by the **tīrthaṅkara**.

11. pūjātiśaya = All **indras**, gods, **cakravartīs** [emperors], **baladeva**, **vāsudeva**, kings, human beings and animals with five organs etc. adore the **tīrthaṅkara bhagavanta**.

12. vacanātiśaya = The sermon of the **bhagavanta** possessing thirty five qualities is understood by the gods, human beings and animals with five organs in their own languages.

atiśaya = A miraculous quality which is not found in any of the living beings in the universe except the **tīrthaṅkara**.

Thirty five qualities of the sermon of tīrthaṅkara bhagavanta :-

1. Sermon will be in accordance with the rules of grammar.
2. Sermon will be in high tone.
3. Sermon will be systematic and cultured.
4. Sermon will be grave like clouds.
5. Sermon will have an echo.
6. Sermon will be easy.

<p>६. वाणी सरल होती है। ७. वाणी मालकोश आदि रागों में होती है। इन्ने सात गुण वाणी के शब्दों की अपेक्षा से होते हैं.ट ८. वाणी विशाल अर्थ वाली होती है। ९. वाणी पूर्व वाक्यों और उनके अर्थ के साथ परस्पर विरोध से रहित होती है। १०. वाणी इष्ट सिद्धांत के अर्थ को कहने वाली और वक्ता की शिष्टता को दर्शाने वाली होती है। ११. वाणी शंका उत्पन्न न करने वाली होती है। १२. वाणी किसी के भी दूषण प्रगट न करने वाली होती है। १३. वाणी मन में प्रसन्नता उत्पन्न करने वाली होती है। १४. पद और वाक्यों में परस्पर सापेक्षता वाली वाणी होती है। १५. वाणी देश, काल के अनुसार उचित होती है। १६. वाणी वस्तु स्वरूप के अनुसार होती है। १७. वाणी विषयांतर रहित और संक्षिप्त होती है। १८. वाणी स्व प्रशंसा और पर निंदा रहित होती है। १९. वाणी प्रतिपाद्य विषय की भूमिका के अनुसार होती है। २०. वाणी स्निग्ध और मधुर होती है।</p>	<p>7. Sermon will be in musical tune like mālakośa. [These seven qualities are in relation to the words of the sermon.] 8. Sermon will be deep in meaning. 9. The Sermon will be without contradiction with previous sentences and their meanings. 10. Sermon will be stating the meaning of desirable principles and will be showing the culture of the speaker. 11. Sermon will not be raising doubts. 12. Sermon will not be disclosing the short comings of any one [living beings]. 13. Sermon will be inducing bliss in the heart. 14. Sermon will have mutual relativity in between the phrases and sentences. 15. Sermon will be appropriate according to the place and time. 16. Sermon will be according to the nature of the subject. 17. Sermon will be without digression and in brief. 18. Sermon will be without self-glorification and censure of others. 19. Sermon will be in accordance with subject matter. 20. Sermon will be fluent and sweet. 21. Sermon will be praise worthy.</p>
--	--

<p>२१. वाणी प्रशंसा के योग्य होती है.</p> <p>२२. वाणी अन्य के मर्म को प्रगट न करने वाली होती है.</p> <p>२३. वाणी आचरण के योग्य होती है.</p> <p>२४. वाणी धर्म इआचारट और इमदार्थों केट अर्थ से युक्त होती है.</p> <p>२५. वाणी कारक, वचन, लिंग आदि की विपरीतता से रहित होती है.</p> <p>२६. वाणी विभ्रम, विक्षेप आदि मनोदोष रहित होती है.</p> <p>२७. वाणी श्रोताओं के मन में आश्चर्य उत्पन्न करने वाली होती है.</p> <p>२८. वाणी अद्रुत होती है.</p> <p>२९. वाणी अति विलंब रहित होती है.</p> <p>३०. वाणी अनेक प्रकार की विचित्रताओं वाली और पदार्थों का अनेक प्रकार से वर्णन करने वाली होती है.</p> <p>३१. वाणी अन्यो की अपेक्षा से विशेषता स्थापित करने वाली होती है.</p> <p>३२. वाणी वर्ण, पद एवं वाक्य के भेद वाली होती है.</p> <p>३३. वाणी सत्त्व प्रधान होती है.</p> <p>३४. वाणी अखंडित प्रवचन प्रवाह वाली और कहने के लिए इच्छित विषय को अच्छी तरह सिद्ध करने वाली होती है.</p> <p>३५. वाणी सहजता से उत्पन्न होने वाली होती है.</p> <p>सिद्ध भगवंत के आठ गुण :-</p>	<p>22. Sermon will not be disclosing the secrets of others.</p> <p>23. Sermon will be worth practising.</p> <p>24. Sermon will be with spiritual conduct and with the meaning of matters.</p> <p>25. Sermon will be without contradiction between case, time, number, gender etc.</p> <p>26. Sermon will be without psychological defects like confusion, interruption.</p> <p>27. Sermon will be creating wonder in the hearts of the listeners.</p> <p>28. Sermon will not be speedy.</p> <p>29. Sermon will be without much delay.</p> <p>30. Sermon will be of many types with great varieties [various expressions] and describing the matters in many ways.</p> <p>31. Sermon will be outstanding in comparison with others.</p> <p>32. Sermon will be with distinct letters, phrases and sentences.</p> <p>33. Sermon will be substantial.</p> <p>34. Sermon will be fluent and proving well the subject desired to tell.</p> <p>35. Sermon will be originating naturally.</p> <p>Eight qualities of siddha bhagavanta :-</p>
--	---

<p>१. अनंत ज्ञान, २. अनंत दर्शन, ३. अनंत चारित्र, ४. अक्षय स्थिति, ५. अरूपित्व, ६. अगुरु लघुत्व, ७. अनंत अव्याबाध इन्द्राधा रहीत सुख और ८. अनंत वीर्य.</p> <p>आचार्य के छत्तीस गुण :- देखें सूत्र-२.</p> <p>उपाध्याय के पच्चीस गुण :-</p> <p>१-२३. ग्यारह इन्द्रांग और बारह इन्द्रांगों को पढ़ना और पढ़ाना.</p> <p>२४-२५. चरण सित्तरी और करण सित्तरी में कुशल होना और कुशल बनाना.</p> <p>ग्यारह अंग के नाम :-</p> <p>१. आचारंग इन्द्राचारांग सूत्र. २. सूयगडंग इन्द्रासूत्र-कृतांग सूत्र. ३. ठाणंग इन्द्रास्थानांग सूत्र.</p>	<p>1. Infinite perfect knowledge, 2. Infinite perfect vision [faith], 3. Infinite perfect conduct, 4. Imperishable status, 5. Formlessness, 6. Neither heavy nor light, 7. Infinite undisturbed bliss and 8. Omnipotence.</p> <p>Thirty six qualities of ācārya :- See sūtra-2.</p> <p>Twenty five qualities of upādhyāya :-</p> <p>1-23. To study and to teach eleven aṅgas [principal sacred scriptures] and twelve upāṅgas [subordinate sacred scriptures] and 24-25. To become proficient and to guide others to become proficient in seventy types of spiritual conducts and seventy types of spiritual rites.</p> <p>Names of eleven aṅgas :-</p> <p>1. āyāraṅga [ācārāṅga] sūtra. 2. sūyagaḍaṅga [sūtra-kṛtāṅga] sūtra. 3. ṭhāṇaṅga [sthānāṅga] sūtra.</p>
---	--

<p>४. समवायंग इस्मवायांगट सूत्र. ५. वियाह-पण्णत्ति इव्याख्या-प्रज्ञप्ति / भगवतीट सूत्र. ६. नाया-धम्म-कहंग इज्जाता-धर्म-कथांगट सूत्र. ७. उवासग-दसंग इउपासक-दशांगट सूत्र. ८. अंतगड-दसंग इअंतकृद्-दशांगट सूत्र. ९. अणुत्तरो-ववाइय-दसंग इअनुत्तरौप-पातिक-दशांगट सूत्र. १०. पण्हा-वागरणंग इअण्ण-व्याकरणांगट सूत्र. ११. विवाग-सुयंग इविपाक-श्रुतांगट सूत्र. बारह उपांग के नाम :- १. ओवाइय / उववाय इऔपपातिकट सूत्र. २. राय-पसेणइज्ज इराज-प्रश्नीयट सूत्र. ३. जीवाजीवाभिगम सूत्र. ४. पण्णवणा इअज्जापनाट सूत्र. ५. सूर-पण्णत्ति इसूर्य-प्रज्ञप्तिट सूत्र. ६. चंद-पण्णत्ति इचन्द्र-प्रज्ञप्तिट सूत्र. ७. जंबूदीव-पण्णत्ति इजंबूद्वीप-प्रज्ञप्तिट सूत्र. ८. निरयावलिया इनिरयावलिकाट सूत्र. ९. कप्पवडिंसिया इकल्पावतंसिकाट सूत्र.</p>	<p>4. samavāyaṅga [samavāyāṅga] sūtra. 5. viyāha-paṇṇatti [vyākhyā-prajñapti / bhagavati] sūtra. 6. nāyā-dhamma-kahaṅga [jñātā-dharma-kathāṅga] sūtra. 7. uvāsaga-dasaṅga [upāsaka-daśāṅga] sūtra. 8. antagaḍa-dasaṅga [antakṛd-daśāṅga] sūtra. 9. aṇuttaro-vavāiya-dasaṅga [anuttaraupa-pātika-daśāṅga] sūtra. 10. paṇhā-vāgaranaṅga [praśna-vyākaraṇāṅga] sūtra. 11. vivāga-suyaṅga [vipāka-śrutāṅga] sūtra. Names of twelve upāṅgas :- 1. ovāiya / uvavāya [aupapātika] sūtra. 2. rāya-paseṇaijja [rāja-praśnīya] sūtra. 3. jīvājīvābhigama sūtra. 4. paṇṇavaṇā [prajñāpanā] sūtra. 5. sūra-paṇṇatti [sūrya-prajñapti] sūtra. 6. canda-paṇṇatti [candra-prajñapti] sūtra. 7. jambūdīva-paṇṇatti [jambūdvīpa-prajñapti] sūtra. 8. nirayāvaliyā [nirayāvalikā] sūtra. 9. kappavaḍinsiyā [kalpāvatansikā] sūtra.</p>
--	---

<p>१०. पुष्फिया झृषिकाट सूत्र. ११. पुष्फ चूलिया झृष चूलिकाट सूत्र. १२. वण्हिदसा झृषिदशाट सूत्र. साधु के सत्ताईस गुण :- १-५. पाँच महाव्रतों का पालन करना. ६. रात्रि भोजन का त्याग करना. झूसूर्यास्त के दो घड़ी (अड़तालीस मिनट) पूर्व से सूर्योदय के दो घड़ी बाद तक आहार-पानी का त्याग करना.ट ७-१२. छः काय के जीवों की रक्षा करना. १३-१७. पाँच इंद्रियों पर नियंत्रण रखना. १८-२०. तीन गुप्तियों का पालन करना. २१. लोभ न करना. २२. क्षमा को धारण करना. २३. मन को निर्मल रखना. २४. विशुद्ध प्रतिलेखन करना. २५. पाँच समितियों का पालन करना. २६,२७. परीषहों तथा उपसर्गों को सहन करना. देव :- यहाँ पर देव शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त हुआ है—</p>	<p>10. pupphiyā [puṣṭikā] sūtra. 11. puppha cūliyā [puṣṭa cūlikā] sūtra. 12. vaṇhidasā [vṛṣṇidaśā] sūtra. Twenty seven qualities of the sādhu :- 1-5. To observe the five great vows. 6. To give up eating during the night. [To give up eating and drinking (water etc.) from two ghaḍī (forty eight minutes) before sun set to two ghaḍī after sun rise]. 7-12. To protect the living beings of six forms. 13-17. To control five organs of senses. 18-20. To observe three guptis. 21. Not to do greed. 22. To practise / bear forgiveness. 23. To keep the heart pure [free from evil thought]. 24. To perform proper / faultless pratilekhana. 25. To observe five samitis. 26,27. To suffer hardships and sufferings. deva [god] :- Here the word deva [god] is used in two meanings--</p>
---	---

१. देवलोक के देव – जहाँ जीव पुण्यवश सीमित समय के लिए उत्पन्न होता है.

२. कर्म क्षय के कारण आत्म स्वरूप को प्राप्त अरिहंत और सिद्ध भगवंत, जो मोक्ष मार्ग में आराध्य देव हैं.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र से अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु— इन पंच झ्मांचट परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है. इस मंत्र से सभी पाप और विघ्न नष्ट हो जाते हैं. यह मन्त्र सभी मंगलों में प्रथम मंगल है.

1. **Heavenly gods** – where the souls takes birth for a limited period as a result of good deeds.

2. **arihanta**s and **siddha bhagavanta**s having attained the perfect form of soul due to annihilation of **karmas**, who are venerable gods in the path of salvation.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra** [aphorism], obeisance is offered to the **arihanta**, the **siddha**, the **ācārya**, the **upādhyāya**, and the **sādhu**—the **pañca** [five] **parameṣṭhī**s. By means of this **mantra**, all sins and impediments get annihilated. This holy hymn is the most auspicious among all the auspices.

२. पंचिंदिय सूत्र

पंचिंदिय-संवरणो, तह नव-विह-बंभचेर-गुत्तिधरो.
 चउविह-कसाय-मुक्को, इअ अट्ठारस-गुणेहिं संजुत्तो..१.
 पंच-महव्वय-जुत्तो, पंच-विहायार-पालण-समत्थो.
 पंच-समिओ तिगुत्तो, छत्तीस-गुणो गुरु मज्झ. २.
 शब्दार्थ :-

१. पंचिंदिय-संवरणो उ पाँच इंद्रियों को वश में रखने वाले
 पंच उ पाँच, इंदिय उ इंद्रियों को, संवरणो उ वश में रखने वाले
 तह नव-विह-बंभचेर-गुत्तिधरो उ तथा नव प्रकार की ब्रह्मचर्य की
 गुप्तियों को धारण करने वाले
 तह उ तथा, नव उ नव, विह उ प्रकार की, बंभचेर उ ब्रह्मचर्य
 की, गुत्ति उ गुप्तियों को, धरो उ धारण करने वाले
 चउविह-कसाय-मुक्को उ चार प्रकार के कषायों से मुक्त
 चउ उ चार, कसाय उ कषायों से, मुक्को उ मुक्त
 इअ अट्ठारस-गुणेहिं संजुत्तो उ इन अट्ठारह गुणों से युक्त

2. pañcīndiya sūtra

pañcīndiya-samvaraṇo, taha nava-viha-bambhacera-guttidharo.
 cauviha-kasāya-mukko, ia atthārasa-guṇehim sañjutto.....1.
 pañca-mahavvaya-jutto, pañca-vihāyāra-pālaṇa-samattho.
 pañca-samio tigutto, chattīsa-guṇo gurū majjha.2.

Literal meaning :-

1. pañcīndiya-samvaraṇo = the controller of five organs of sense
 pañca = five, indiya = organs of sense, samvaraṇo = the controller of
 taha nava-viha-bambhacera-guttidharo = and the observer of nine types of
 restrictions [for the proper observance] of celibacy
 taha = and, nava = nine, viha = types of, bambhacera = of celibacy, gutti
 = restrictions, dharo = the observer of
 cauviha-kasāya-mukko = free from four types of kaṣāyas
 cau = four, kasāya = kaṣāyas, mukko = free from
 ia atthārasa-guṇehim sañjutto = possessing these eighteen virtues

इअ उ इन, अट्ठारस उ अट्ठारह, गुणेहिं उ गुणों से, संजुत्तो उ युक्त

२. पंच-महव्वय-जुत्तो उ पाँच महाव्रतों से युक्त

महव्वय उ महाव्रतों से, जुत्तो उ युक्त

पंच-विहा-यार-पालण-समत्थो उ पाँच प्रकार के आचारों का पालन करने में समर्थ

आयार उ आचारों का, पालण उ पालन करने में, समत्थो उ समर्थ

पंच-समिओ ति-गुत्तो उ पाँच समितियों से युक्त और तीन गुप्तियों से युक्त

समिओ उ समितियों से युक्त, ति उ तीन, गुत्तो उ गुप्तियों से युक्त

छत्तीस-गुणो गुरु मज्झ उ इन्हनट छत्तीस गुणों वाले मेरे गुरु हैं

छत्तीस उ छत्तीस, गुणो उ गुणों वाले, गुरु उ गुरु, मज्झ उ मेरे

गाथार्थ :-

पाँच इंद्रियों को वश में रखने वाले, नव प्रकार की ब्रह्मचर्य की गुप्तियों को धारण करने वाले, चार प्रकार के कषायों से मुक्त— इन अट्ठारह गुणों से युक्त, तथा... १.

...पाँच महाव्रतों से युक्त, पाँच प्रकार के आचारों का पालन करने में समर्थ, पाँच समितियों से युक्त और तीन गुप्तियों से युक्त— इन्हनट छत्तीस गुणों

ia = these, atthārasa = eighteen, guṇehim = virtues, sañjutto = possessing

2. pañca-mahavvaya-jutto = observing the five great vows

mahavvaya = great vows, jutto = observing

pañca-vihā-yāra-pālaṇa-samattho = capable in observing five types of right conduct

āyāra = right conduct, pālaṇa = in observing, samattho = capable

pañca-samio ti-gutto = observing five samitis and observing three guptis

samio = observing samitis, ti = three, gutto = observing guptis

chattisa-guṇo gurū majjha = the possessor of [these] thirty six qualities is my guru

chattisa = thirty six, guṇo = possessor of qualities, gurū = guru, majjha = my

Stanzaic meaning :-

The controller of five organs of sense, the observer of nine types of restrictions of celibacy, free from four types of kaṣāyas-- possessing these eighteen qualities and... 1.

...observing the five great vows, capable in observing five types of right conduct, observing five samitis and observing three guptis-- the possessor of [these] thirty

वाले मेरे गुरु हैं २.

विशेषार्थ :-

इन्द्रिय उ संसारी जीव को पहचानने का चिह्न / संसारी जीव द्वारा पौद्गलिक भावों को आंशिक रूप से जानने का साधन.

पाँच इन्द्रियों के तेईस विषय :-

१. **स्पर्शेन्द्रिय इत्त्वचाट के आठ विषय-** स्पर्श द्वारा हलकापन, भारीपन, कोमलता, कठोरता, शीतलता, ऊष्णता, चिकनाहट और रूखेपन को जानना.

२. **रसनेन्द्रिय इज्जीभट के पाँच विषय-** स्वाद द्वारा मधुरता, खटाई, खारापन, कड़वाहट और तीखेपन को जानना.

३. **घ्राणेन्द्रिय इन्नासिकाट के दो विषय-** सुगंध और दुर्गंध को जानना.

४. **चक्षुरिन्द्रिय इआंखट के पाँच विषय-** सफेद, काला, लाल, पीला और हरे रंग को देखकर जानना.

५. **श्रोत्रेन्द्रिय इक्रानट के तीन विषय-** सचित्त इज्जीवंत प्राणी केट शब्द, अचित्त इन्निर्जीव वस्तु केट शब्द और मिश्र इज्जीवंत प्राणी और

six qualities is my **guru**. 2.

Specific meaning :-

indriya = Organ of sense / mark to identify the worldly living beings / a mean for worldly living beings to know the state of matters partially.

Twenty three sensual pleasures of five sense organs :-

1. **Eight objects of pleasure of sparśendriya [organs of sense for touching skin]-** To know lightness, heaviness, softness, hardness, coldness, hotness, oiliness and dryness by touching.

2. **Five objects of pleasure of rasanendriya [organ of sense for tasting-tongue]-** To know sweetness, sourness, alkalinity, bitterness and acidity by tasting.

3. **Two objects of pleasure of ghrāṇendriya [organ of sense for smelling-nose]-** To know fragrance and foul smell by smelling.

4. **Five objects of pleasures of cakṣurindriya [sense organ for seeing- eyes]-** -To know the colours of white, black, red, yellow and green by seeing.

5. **Three objects of pleasures of śrotrendriya [organ of sense for hearing -ears]-** To hear **sacitta** sound [sound of living / sentient beings], **acitta** sound

<p>निर्जीव वस्तु का मिला जुलाट शब्द सुनना.</p> <p>ब्रह्मचर्य उ देव, मनुष्य और तिर्यच संबंधी विषय भोग से रहित होकर, मैथुन सेवन का तीन योग और तीन करण से त्याग करना.</p> <p>ब्रह्मचर्य की नव गुप्तियाँ :-</p> <ol style="list-style-type: none"> १. स्त्री, पशु और नपुंसक रहित स्थान में रहना. २. स्त्री संबंधी वार्तालाप न करना. ३. स्त्री जिस स्थान में बैठी हो उस स्थान में पुरुष दो घड़ी तक न बैठे. इम्रुष जिस स्थान में बैठा हो वहां महिला तीन प्रहर तक न बैठे. ४. स्त्रियों के अंगोपांग न देखना. ५. दीवाल की आड़ में स्त्री-पुरुष का युगल रहता हो ऐसे स्थान में न रहना. ६. पूर्व काल में की हुई रति क्रीड़ा का स्मरण न करना. ७. प्रमाण से अधिक आहार न करना. इआहार प्रमाण- पुरुष के लिये बत्तीस कवल और स्त्री के लिये अट्ठाईस कवल.ट ८. मादक आहार-पानी न लेना. ९. शरीर शृंगार न करना. 	<p>[sound of inanimate / insentient objects] and miśra [mixed] sound [sound of both living beings and inanimate objects].</p> <p>brahmacharya = To give up sexual activities by three yoga and three karaṇa, being devoid of sexual enjoyment with gods, human beings and animal beings.</p> <p>Nine restrictions [for proper observance / protection] of celibacy :-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. To reside in a place devoid of women, animals and eunuchs. 2. Not to talk about women. 3. Man should not sit upto two ghaḍī in a place where a woman has sat. [Women should not sit upto three prahara in a place where a man has sat.] 4. Not to observe the body or parts of the body of women. 5. Not to reside in a place where a couple of a man and woman is staying on other side of the wall. 6. Not to remember sexual pleasures enjoyed in the past. 7. Not to take excessive food beyond limit. [Limit of food for man thirty two morsels and for woman twenty eight morsels]. 8. Not to take intoxicating food or drinks. 9. Not to decorate the body.
--	--

<p>इस्त्रियों के लिए स्त्री की जगह पुरुष शब्द समझना.ट कषाय उ जीव के शुद्ध स्वरूप को दूषित कर, संसार प्राप्त कराने वाले परिणाम. चार प्रकार के कषाय :- १. क्रोध- गुस्सा, द्वेष, वैर, अक्षमा. २. मान- अभिमान, अहंकार, मद, अनम्रता. ३. माया- कपट, ठगई, असरलता. ४. लोभ- तृष्णा, लालसा, असंतोष. महाव्रत :- १. कठिनता से पालन की जाने वाली संयम संबंधी प्रतिज्ञा. २. सूक्ष्म इमूर्णट रूप से पाले जाने वाले व्रत / साधु द्वारा निरपराधी या अपराधी, त्रस इस्वेच्छा से चल-फिर सकने वाले ट या स्थावर इस्वेच्छा से चल-फिर न सकने वाले जीव की संकल्प या आरंभ पूर्वक इअपेक्षा रहित, निरपेक्ष इअकारणट या सापेक्ष इस्कारणट हिंसादि का तीन योग इमन-वचन-काय योगट और तीन करण इकरना, कराना, करते हुए का अनुमोदन करनाट से त्याग करने का नियम.</p>	<p>[The word man should be considered in place of woman for women.] kaṣāya = Passions leading in increase of life cycle, polluting the pure nature of the soul. Four types of kaṣāya :- 1. krodha [anger]– Rage, malice, enmity, non-forgiveness. 2. māna [pride]– Vanity, egotism, arrogance, lack of courtesy. 3. māyā [fraud]– Deceit, cheating, innocence. 4. lobha [greed]– Desire, covetousness, discontentment. mahāvrata [great vow] :- 1. Vow relating to self-restraint being observed with great difficulty. 2. Vow being observed minutely [completely] / vow of giving up violence of innocent or guilty, trasa [capable of moving voluntarily] or sthāvara [incapable to move voluntarily] living beings with determination or unintentionally [without any expectation], without reason or with reason with three yoga [activities of mind, speech and body] and three karaṇa [doing, getting done and appreciating of being done by others] by the sādhū.</p>
--	--

पाँच महाव्रत :-

१. प्राणातिपात विरमण व्रत- तीन योग और तीन करण से हिंसा का त्याग.
२. मृषावाद विरमण व्रत- तीन योग और तीन करण से असत्य का त्याग.
३. अदत्तादान विरमण व्रत- तीन योग और तीन करण से अदत्त का त्याग.
४. मैथुन विरमण व्रत- तीन योग और तीन करण से मैथुन सेवन का त्याग.
५. परिग्रह विरमण व्रत- तीन योग और तीन करण से परिग्रह का त्याग.

आचार उ सम्यग् आचरण

पाँच प्रकार के आचार :-

१. ज्ञानाचार- ज्ञान इआध्यात्म ज्ञानट में विधि पूर्वक वृद्धि कराने वाला आचार.
२. दर्शनाचार- दर्शन इश्रद्धाट गुण में वृद्धि और स्थिरता कराने वाला आचार.
३. चारित्राचार- चारित्र में वृद्धि और स्थिरता कराने वाला आचार.
४. तपाचार- बाह्य और अभ्यंतर तप में वृद्धि कराने वाला आचार.

Five great vows :-

1. prāṇātipāta viramaṇa vrata- Giving up of violence with three **yoga** and three **karaṇa**.
2. mṛṣāvāda viramaṇa vrata- Giving up of untruth with three **yoga** and three **karaṇa**.
3. adattādāna viramaṇa vrata- Giving up of things not given with three **yoga** and three **karaṇa**.
4. maithuna viramaṇa vrata- Giving up of sexual pleasures / activities with three **yoga** and three **karaṇa**.
5. parigraha viramaṇa vrata- Giving up of possessions by three **yoga** and three **karaṇa**.

ācāra = Right conduct / behaviour.

Five types of conduct :-

1. jñānācāra- Activities leading to improvement in **jñāna** [spiritual knowledge] according to the procedure.
2. darśanācāra- Activities leading to improvement and stability in the virtue of **darśana** [right conduct].
3. cāritrācāra- Activities leading to improvement and stability in **cāritra** [spiritual

<p>५. वीर्याचार- संयम आदि में वीर्य इब्रल / पराक्रम / उल्लासट की वृद्धि कराने वाला आचार.</p> <p>समिति उ एकाग्र चित्त से सम्यक् क्रियाओं में प्रवृत्ति.</p> <p>गुप्ति उ अनिष्ट प्रवृत्तियों से निवृत्ति.</p> <p>पाँच समिति और तीन गुप्ति :-</p> <p>१. इर्या समिति- जयणा पूर्वक हितकारी गति से चलना.</p> <p>२. भाषा समिति- जयणा पूर्वक निरवद्य वचन बोलना.</p> <p>३. एषणा समिति- जयणा पूर्वक निर्दोष भिक्षा ग्रहण करना.</p> <p>४. आदानभंडमत्त निक्षेपणा समिति- अवलोकन और प्रतिलेखन कर वस्तु को जयणा पूर्वक लेना या रखना.</p> <p>५. पारिष्ठापनिका समिति- जयणा पूर्वक अनुपयोगी वस्तु और मल-मूत्रादि का विसर्जन करना.</p> <p>६. मन गुप्ति- मन की अशुभ और अनावश्यक प्रवृत्तियों का निग्रह करना इन्द्रोकनाट.</p> <p>७. वचन गुप्ति- सावद्य और अनावश्यक वाणी का निग्रह करना.</p> <p>८. काय गुप्ति- सावद्य और अनावश्यक शारीरिक क्रियाओं का निग्रह करना.</p>	<p>rites / right conduct].</p> <p>4. tapācāra– Activities leading to increment in external and internal tapa [penance].</p> <p>5. vīryācāra– Activities leading to increment of vīrya [virility / strength / valour / joy] in sañyama etc.</p> <p>samiti = Propensity in right activities with full concentration.</p> <p>gupti = Renunciation from harmful activities.</p> <p>Five samitis and three guptis :-</p> <p>1. iryā samiti– To walk with jayaṇā [great care] with beneficial movement.</p> <p>2. bhāṣā samiti– To speak harmless words with jayaṇā [great care].</p> <p>3. eṣaṇā samiti– To take faultless alms with jayaṇā.</p> <p>4. ādānabhaṇḍamatta nikṣepaṇā samiti– To take or keep the things with jayaṇā after proper observation and doing pratilekhana.</p> <p>5. pāriṣṭhāpanikā samiti– To give up unuseful things and release of excrement etc. with jayaṇā.</p> <p>6. mana gupti– To control evil and unnecessary propensities of the mind.</p> <p>7. vacana gupti– To restrain harmful and unnecessary speech.</p>
--	--

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र में श्री आचार्य महाराज इगुरुट के छत्तीस गुणों का वर्णन है।
कोई भी धार्मिक क्रिया करते समय स्थापनाचार्यजी की स्थापना करने के
लिये यह सूत्र बोला जाता है।

8. kāya gupti– To restrain / control harmful and unnecessary activities of the body.

Introduction of the sūtra :-

In this **sūtra**, there is a description of thirty six qualities of **śrī ācārya mahārāja [guru]**. This **sūtra** is uttered to consecrate the **sthāpanācāryajī** at the time of the performance of any sacred rite.

३. खमासमण सूत्र

इच्छामि खमा-समणो! वंदिउं, जावणिज्जाए
निसीहिआए?, मत्थएण वंदामि. १.

शब्दार्थ :-

इच्छामि उ मैं चाहता हूँ

खमा-समणो! उ हे क्षमा-श्रमण! / हे क्षमावान साधु महाराज!

वंदिउं उ वंदन करने के लिये

जावणिज्जाए उ शक्ति के अनुसार

निसीहिआए उ पापमय प्रवृत्तिओं इच्छापारट को त्याग कर

मत्थएण वंदामि उ मस्तक इआदि पाँच अंगों से मैं वंदन करता हूँ

मत्थएण उ मस्तक से, वंदामि उ वंदन करता हूँ

गाथार्थ :-

हे क्षमावान साधु महाराज! आपको मैं शक्ति के अनुसार पापमय प्रवृत्तियों को त्याग कर वंदन करना चाहता हूँ. मैं मस्तक इआदि पाँच अंगों से वंदन करता हूँ. १.

3. khamāsamaṇa sūtra

icchāmi khamā-samaṇo! vandium, jāvaṇijjāe
nisīhiāe?, matthaena vandāmi. 1.

Literal meaning :-

icchāmi = i wish

khamā-samaṇo! = oh kṣamā-śramaṇa! / oh sādhu mahārāja of forgiving nature!

vandium = to obeisance

jāvaṇijjāe = according to the best of my ability

nisīhiāe = renouncing evil activities

matthaena vandāmi = i obeisance with [five organs of the body such as] head

matthaena = with head, vandāmi = i obeisance

Stanzaic meaning :-

Oh sādhu mahārāja of forgiving nature! I wish to obeisance you according to the best of my ability, renouncing evil activities. I obeisance with [five organs of the body such as] head. 1.

विशेषार्थ :-

क्षमा-श्रमण उ दस प्रकार के **यति धर्म** का पालन करते हुए सर्व जीवों इष्टात्रु हों या मित्र होंट के प्रति समभाव रखने वाले तथा इंद्रियों को वश में रखकर आत्म शुद्धि के लिये श्रम करने वाले **साधु**.

गुरु उ अज्ञान को दूर करने वाले.

सद्गुरु उ स्वयं संसार समुद्र को तरने वाले और दूसरों को तारने वाले **गुरु**.

दस प्रकार के यति धर्म :-

- १-४. क्षमा, मृदुता, सरलता और पवित्रता रखना.
५. सत्य बोलना.
६. संयम का पालन करना.
७. तप करना.
८. त्याग वृत्ति रखना.
९. परिग्रह न रखना.
१०. ब्रह्मचर्य का पालन करना.

गुरु वंदन :- बहुमान व्यक्त करने के लिए **गुरु** को किया जाने वाला वंदन.

तीन प्रकार के गुरु वंदन :-**Specific meaning :-**

kṣamā śramaṇa = sādhu keeping equanimity with all living beings [may be either friend or foe] observing ten types of **yati dharma** [code of conduct prescribed for a **sādhu**] and making efforts for purifying the soul keeping the sense organs under control.

guru = The remover of ignorance.

sadguru [Right preceptor] = guru who crosses the ocean of life and guides others to cross it.

Ten types of yati dharma :-

- 1-4. To have the nature of forgiveness, simplicity, tenderness and sacredness.
5. To speak truth.
6. To observe self control.
7. To do penance.
8. To keep the nature of giving up [of material things to other].
9. Not to keep possessions.
10. To observe celibacy.

guru vandana :- Obeisance performed to the **guru** to express honour.

१. फिट्टा वंदन :- मार्ग में चलते समय मत्थएण वंदामि कहते हुए, मस्तक नमाकर हाथ जोड़कर प्रणाम करना.

२. थोभ वंदन :- खमासमण सूत्र बोलते हुए दो बार पंचांग प्रणिपात करना.

३. द्वादशावर्त वंदन :- वांदना सूत्र बोलते हुए दो बार वंदन करना.

पंचांग प्रणिपात :- दो हाथ, दो घुटने, और मस्तक को पूर्णतया झुकाकर प्रणाम करना.

फिट्टा वंदन :- साधु सर्व साधुओं को, साध्वी सर्व साधु और साध्वियों को परस्पर, श्रावक और श्राविका सर्व साधु-साध्वियों को करते हैं.

थोभ वंदन :- साधु सर्व बड़े साधुओं को, साध्वी सर्व साधु और बड़ी साध्वियों को, श्रावक सर्व साधुओं को, श्राविका सर्व साधु और साध्वियों को करते हैं.

द्वादशावर्त वंदन :- साधु, साध्वी, श्रावक व श्राविकाएँ आचार्य आदि पदस्थ साधुओं को; समान पद वाले साधु अपने से अधिक दीक्षा पर्याय वाले साधुओं को, छोटे पद वाले साधु बड़े पद वाले साधुओं को द्वादशावर्त वंदन करते हैं.

गुरु वंदन के चार अवसर :- गुरु शांत बैठे रहने पर, आसन पर बैठे रहने पर, अप्रमत्त रहने पर और गुरु वंदन कराने के लिए तैयार होने पर

Three types of guru vandana :-

1. phittā vandana :- To make an obeisance on the way saying matthaṇa vandāmi bowing the head with folded hands.
 2. thobha vandana :- To perform pañcāṅga praṇipāta twice saying khamāsamaṇa sūtra.
 3. dvādaśāvartta vandana :- To make obeisance twice saying vāndanā sūtra.
- pañcāṅga praṇipāta :- To perform obeisance bowing with two hands, two knees and head completely [touching the floor].
- phittā vandana :- sādhu does to all sādhus, sādhvī does to all sādhus and sādhvīs mutually, śrāvaka and śrāvikā does to all sādhus and sādhvīs.
- thobha vandana :- sādhu does to all elder sādhus, sādhvī does to all sādhus and elder sādhvīs, śrāvaka does to all sādhus, śrāvikā does to all sādhus and sādhvīs.
- dvādaśāvartta vandana :- sādhu, sādhvī, śrāvaka and śrāvikās performs dvādaśāvartta vandana to sādhus designated like ācārya, sādhus with similar designations to sādhus having more period of dīkṣā than himself, sādhus with lower designation to sādhus having higher designations.
- Four occasions for making obeisance to the guru :- The obeisance is done when

वंदन किया जाता है.

गुरु वंदन के चार अनवसर :- गुरु धर्म चिंतन में होने पर, आसन पर बैठे न रहने पर, प्रमाद में होने पर और आहार- नीहार करते हों या करने की तैयारी में होने पर वंदन नहीं किया जाता है.

सूत्र परिचय :-

यह सूत्र जिनेश्वर प्रभु और क्षमा-श्रमण इसाधुट को वंदन करते समय बोला जाता है.

the **guru** is sitting peacefully, is sitting on his seat, is alert [not resting] and is ready to receive the **guru vandana**.

Four unoccasions for making obeisance to the guru :- Obeisance should not be done when the **guru** is busy in religious contemplation, is not sitting on the seat, is not alert [is resting] and is taking food or excreting or is about to take food or excrete.

Introduction of the sūtra :-

This **sūtra** is uttered while offering obeisance to the lord **jineśvara** and **kṣamā-śramaṇa [sādhū]**.

४. इच्छकार सूत्र

इच्छकार सुह-राइ? सुह-देवसि? सुख-तप?
शरीर-निराबाध? सुख-संजम-यात्रा-निर्वहते हो जी?
स्वामि! शाता है जी? आहार-पानी का लाभ देना जी.

.१.

शब्दार्थ :-

इच्छकार उ मैं झूछनाट चाहता हूँ.

सुह-राइ? उ आप रात्रि में सुख पूर्वक रहे हो?

सुह उ सुख पूर्वक, राइ उ रात्री में

सुह-देवसि? उ आप दिन में सुख पूर्वक रहे हो?

देवसि उ दिन में

सुख-तप? उ आपको तप सुख पूर्वक होता है?

सुख उ सुख पूर्वक, तप उ तप

शरीर-निराबाध? उ आपका शरीर पीड़ा रहित है?

शरीर उ शरीर, निराबाध उ पीड़ा रहित

4. icchakāra sūtra

icchakāra suha-rāi? suha-devasi? sukha-tapa?
śarīra-nirābādha? sukha-saṅjama-yātrā-nirvahate ho jī?
svāmi! śātā hai jī? āhāra-pānī kā lābha denā jī.1.

Literal meaning :-

icchakāra = i wish [to enquire]

suha-rāi? = were you comfortable [free from troubles] during the night?

suha = comfortable, rāi = during the night

suha-devasi? = were you comfortable [free from troubles] during the day?

devasi = during the day

sukha-tapa? = are you able to perform penance comfortably?

sukha = comfortably, tapa = penance

śarīra-nirābādha? = is your body free from afflictions?

śarīra = body, nirābādha = free from afflictions

sukha-saṅjama-yātrā-nirvahate ho jī? = are you pursuing comfortably in your ascetic life?

सुख-संजम-यात्रा-निर्वहते हो जी? उ आप अपनी संयम यात्रा का सुख पूर्वक निर्वाह करते हो जी?
 संजम उ संयम, यात्रा उ यात्रा, निर्वहते उ निर्वाह करते, हो जी उ हो जी
 स्वामि! शाता है जी? उ हे स्वामी! आप सुख शान्ति में हो?
 स्वामि उ हे स्वामी!, शाता उ सुख शांति, है जी उ में हो
 आहार-पानी का लाभ देना जी उ आहार, पानी आदि को ग्रहण कर लाभ देनाजी.
 आहार उ आहार, पानी उ पानी, का उ का, लाभ उ लाभ, देना जी उ देना जी

गाथार्थ :-

इहे गुरुजी!ट मैं झूमूछनाट चाहता हूँ. रात्रि में आप सुख पूर्वक रहे हो? इदिन में आप सुख पूर्वक रहे हो?ट आपको तप सुख पूर्वक होता है? आपका शरीर पीड़ा रहित है? आप अपनी संयम यात्रा का सुख पूर्वक निर्वाह करते हो जी? हे स्वामी, आप सुख-शांति में हो? आहार, पानी आदि को ग्रहण कर लाभ देनाजी. १.

sañjama = ascetic, yātrā = life, nirvahate = pursuing, ho jī = are you

svāmi! śātā hai jī? = oh svāmi! are you in happy and peace?

svāmi = oh svāmi!, śātā = happy and peace, hai jī = are you

āhāra-pānī kā lābha denā jī = kindly give me benefit by accepting food, water etc.

āhāra = food, pānī = water, kā = of, lābha = benefit, denā jī = give me

Stanzaic meaning :-

[Oh guruji!] I wish [to enquire]. Were you comfortable during the night? [were you comfortable during the day?]. Are you able to perform penance comfortably? Is your body free from pain? Are you pursuing comfortably in your ascetic life? Oh svāmi! are you in happy and peace. Kindly give me benefit by accepting food, water etc. 1.

Specific meaning :-

suha rāi and suha devasi :- suha rāi is spoken from 12 o'clock in the night to 12 o'clock in the day and suha devasi from 12 o'clock in the day to 12 o'clock

विशेषार्थ :-

सुह राइ एवं सुह देवसि :- रात्रि के बारह बजे से दिन के बारह बजे तक **सुह राइ** एवं दिन के बारह बजे से रात्रि के बारह बजे तक **सुह देवसि** बोला जाता है.

सूत्र परिचय :-

इस **सूत्र** से **गुरु महाराज** को सर्व प्रकार से भक्ति पूर्वक सुख-शांता पूछी जाती है और आहार, पानी आदि ग्रहण करने के लिये विनती की जाती है.

in the night.

Introduction of the sūtra :-

By this **sūtra**, welfare is being asked in all ways to the **guru mahārāja** with devotion and an entreaty is also made to accept food, water etc.

४ अ. अब्भुट्ठिओमि सूत्र

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि,
अब्भितर-देवसिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि देवसिअं.
जं किंचि अपत्तिअं, पर-पत्तिअं; भत्ते, पाणे;
विणए, वेयावच्चे; आलावे, संलावे; उच्चासणे, समासणे;
अंतर-भासाए, उवरि-भासाए; जं किंचि मज्झ
विणय-परिहीणं, सुहुमं वा, बायरं वा; तुब्भे जाणह,
अहं न जाणामि; तस्स मिच्छा मि दुक्कडं. १.

शब्दार्थ :-

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! उ हे भगवन्! स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान
करो

इच्छा-कारेण उ स्वेच्छा से, संदिसह उ आज्ञा प्रदान करो,
भगवन्! उ हे भगवन्!

अब्भुट्ठिओमि उ मैं उपस्थित हूँ

अब्भितर-देवसिअं खामेउं? उ दिन में किये हुए इअपराधों कीट क्षमा

4 A. abbhuṭṭhiomi sūtra

icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! abbhuṭṭhiomi,
abbhīntara-devasiam khāmeu? iccham, khāmemi devasiam.
jam kiñci apattiam, para-pattiam; bhatte, pāṇe;
viṇae, veyāvacce; ālāve, saṇlāve; uccāsaṇe, samāsaṇe;
antara-bhāsāe, uvari-bhāsāe; jam kiñci majjha
viṇaya-parihīṇam, suhumam vā, bāyaram vā; tubbhe jāṇaha,
aham na jāṇāmi; tassa micchā mi dukkaḍam.1.

Literal Meaning :-

icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! = oh bhagavan! kindly give me the
permission voluntarily

icchā-kāreṇa = voluntarily, sandisaha = kindly give me the permission,
bhagavan! = oh bhagavan!

abbhuṭṭhiomi = i am present

abbhīntara-devasiam khāmeu? = to seek forgiveness [for the faults]

<p>मांगने के लिये अब्भितर उ किये हुए, देवसिअं उ दिन में, खामेउं उ क्षमा मांगने के लिये इच्छं उ आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ खामेमि देवसिअं उ दिवस में हुए इअपराधों कीट मैं क्षमा मांगता हूँ खामेमि उ मैं क्षमा मांगता हूँ, देवसिअं उ दिवस में हुए जं किंचि अपत्तिअं पर-पत्तिअं उ जो कोई अप्रीतिकारक, विशेष अप्रीतिकारक हुआ हो जं उ जो, किंचि उ कोई, अपत्तिअं उ अप्रीतिकारक, पर-पत्तिअं उ विशेष अप्रीतिकारक हुआ हो भत्ते पाणे उ आहार-पानी में भत्ते उ आहार, पाणे उ पानी में विणए वेयावच्चे उ विनय, वैयावृत्त्य में विणए उ विनय, वेयावच्चे उ वैयावृत्त्य में आलावे संलावे उ बोलने में, बातचीत करने में आलावे उ बोलने में, संलावे उ बातचीत करने में उच्चासणे समासणे उ इगुरु सेट ऊंचे आसन पर बैठने से, इगुरु केट समान आसन पर बैठने से</p>	<p>committed during the day abbhintara = committed, devasiam = during the day, khāmeu = to seek forgiveness iccham = i accept your order khāmemi devasiam = i beg pardon [for the misdeeds] committed during the day khāmemi = i beg pardon, devasiam = committed during the day jam kiñci apattiam para-pattiam = whatever unpleasantness, bitterness is done jam kiñci = whatever, apattiam = unpleasantness, para-pattiam = bitterness is done bhatte pāṇe = in the matter of food, water bhatte = in the matter of food, pāṇe = water viṇae veyāvacce = regarding politeness, dedicated service viṇae = regarding politeness, veyāvacce = dedicated service ālāve sanlāve = while talking, during conversation ālāve = while talking, sanlāve = during conversation uccāsane samāsane = by sitting on a place [seat] higher [than the guru], by sitting on a place equivalent [to that of guru]</p>
---	---

<p>उच्चासणे उ उंचे आसन पर बैठने से, समासणे उ समान आसन पर बैठने से</p> <p>अंतर-भासाए उवरि-भासाए उ झगुरु केट बीच में बोलने से, झगुरु की बात परट टीका-टिप्पणी करने से</p> <p>अंतर उ बीच में, भासाए उ बोलने से, उवरि-भासाए उ टीका-टिप्पणी करने से</p> <p>जं किंचि मज्झ विणय-परिहीणं उ मुझसे जो कोई विनय रहित झवर्तनट हुआ हो</p> <p>मज्झ उ मुझसे, विणय उ विनय, परिहीणं उ रहित वर्तन हुआ हो</p> <p>सुहुमं वा बायरं वा उ सूक्ष्म झछोटोट या बादर झबड़ाट</p> <p>सुहुमं उ सूक्ष्म, वा उ या, बायरं उ बादर</p> <p>तुब्भे जाणह अहं न जाणामि उ आप जानते हो, मैं नहीं जानता हूँ</p> <p>तुब्भे उ आप, जाणह उ जानते हो, अहं उ मैं, न उ नहीं, जाणामि उ जानता हूँ</p> <p>तस्स मिच्छा मि दुक्कडं उ मेरे वे दुष्कृत्य मिथ्या हों</p> <p>तस्स उ वे, मिच्छा उ मिथ्या हों, मि उ मेरे, दुक्कडं उ दुष्कृत्य</p>	<p>uccāsaṇe = by sitting on a place higher, samāsaṇe = by sitting on a place equivalent</p> <p>antara-bhāsāe uvari-bhāsāe = by interrupting [while the guru is talking], by commenting [on the talks of the guru]</p> <p>antara-bhāsāe = by interrupting, uvari-bhāsāe = by commenting</p> <p>jaṃ kiñci majjha viṇaya-parihīṇaṃ = if any discourteous [act] is shown by me</p> <p>jaṃ = if, kiñci = any, majjha = by me, viṇaya = discourteous [act], parihīṇaṃ = is shown</p> <p>suhumaṃ vā bāyaraṃ vā = minor [minute] or major [big]</p> <p>suhumaṃ = minor, vā = or, bāyaraṃ = major</p> <p>tubbhe jāṇaha ahaṃ na jāṇāmi = you know, i do not know</p> <p>tubbhe = you, jāṇaha = know, ahaṃ = i, na = do not, jāṇāmi = know</p> <p>tassa micchā mi dukkaḍaṃ = those misdeeds of mine may become fruitless</p> <p>tassa = those, micchā = may become fruitless, mi = of mine, dukkaḍaṃ = misdeeds</p>
--	--

गाथार्थ :-

हे **भगवन्**! स्वेच्छा से आज्ञा प्रदान करो। दिन में किये हुए इअपराधों कीट क्षमा मांगने के लिये मैं उपस्थित हुआ हूँ। आपकी आज्ञा स्वीकार करता हूँ। दिन में हुए इअपराधों कीट मैं क्षमा मांगता हूँ। आहार-पानी में, विनय में, वैयावृत्य में, बोलने में, बातचीत करने में, ऊँचे आसन पर बैठने से, समान आसन पर बैठने से, बीच में बोलने से, टीका करने से जो कोई अप्रीतिकारक, विशेष अप्रीतिकारक हुआ हो, छोटा या बड़ा विनय रहित इवर्तनट मुझसे हुआ हो, इज्जोट आप जानते हो, मैं नहीं जानता हूँ, मेरे वे अपराध मिथ्या हों। १.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र से **गुरु महाराज** के प्रति हुए अविनय के लिये क्षमा मांगी जाती है।

Stanzaic Meaning :-

Oh **bhagavan**! kindly give me the permission voluntarily. I am present to seek forgiveness [for the faults] committed during the day. I accept your orders. I beg pardon [for the misdeeds] committed during the day. If any unpleasantness, bitterness is done in the matter of food-water, regarding politeness, dedicated service, while talking, during conversation, by sitting on a higher place, by sitting on an equivalent place, by interrupting, by commenting any major or minor discourteous [act] in shown by me [which] you know, I do not know, those misdeeds of mine may become fruitless. 1.

introduction of the sūtra :-

By this **sūtra**, forgiveness is asked for the impoliteness shown towards **guru mahārāja**.

५. इरियावहिया सूत्र

इच्छा-कारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं
 पडिक्कमामि? इच्छं, इच्छामि पडिक्कमिउं. १.
 इरियावहियाए, विराहणाए. २.
 गमणागमणे. ३.
 पाण-क्कमणे, बीय-क्कमणे, हरिय-क्कमणे, ओसा-उत्तिग-
 पणग-दग-मट्ठी-मक्कडा-संताणा-संकमणे. ४.
 जे मे जीवा विराहिया. ५.
 एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया. ६.
 अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया,
 किलामिया, उद्विया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ
 ववरोविया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं. ७.
 शब्दार्थ :-

१. इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! उ हे भगवन्! स्वेच्छा से आज्ञा

5. iriyāvahiyā sūtra

icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! iriyāvahiyam
 paḍikkamāmi? iccham, icchāmi paḍikkamīu. 1.
 iriyāvahiyāe, virāhaṇāe. 2.
 gamaṇāgamaṇe. 3.
 pāṇa-kkamaṇe, bīya-kkamaṇe, hariya-kkamaṇe, osā-utṭiṅga-
 paṇaga-daga-maṭṭī-makkaḍā-santāṇā-saṅkamaṇe. 4.
 je me jīvā virāhiyā. 5.
 egindiyā, beindiyā, teindiyā, caurindiyā, pañcindiyā. 6.
 abhihayā, vattiyā, lesiyā, saṅghāiyā, saṅghaṭṭiyā,
 pariyāviyā, kilāmiyā, uddaviyā, ṭhāṇāo ṭhāṇam saṅkāmiyā,
 jīviyāo vavaroviyā, tassa micchā mi dukkaḍam. 7.

Literal meaning :-

1. icchā-kāreṇa sandisaha bhagavan! = oh bhagavan! give me the

<p>दीजिये इच्छाकारेण उ स्वेच्छा से, संदिसह उ आज्ञा दीजिये, भगवन्! उ हे भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि? उ आने जाने की क्रिया से लगे पाप का प्रतिक्रमण करुं? इरियावहियं उ आने जाने की क्रिया से लगे पाप का, पडिक्कमामि? उ प्रतिक्रमण करुं? इच्छं उ आपकी आज्ञा मैं स्वीकार करता हूँ इच्छामि पडिक्कमिउं उ मैं प्रतिक्रमण करना चाहता हूँ इच्छामि उ मैं चाहता हूँ, पडिक्कमिउं उ प्रतिक्रमण करना २. इरियावहियाए विराहणाए उ मार्ग में चलते समय हुई विराधना का इरियावहियाए उ मार्ग में चलते समय हुई, विराहणाए उ विराधना का ३. गमणागमणे उ आते जाते ४. पाण-क्कमणे उ प्राणियों को दबाने से पाण उ प्राणियों को, क्कमणे उ दबाने से बीय-क्कमणे उ बीज को दबाने से बीय उ बीज को</p>	<p>permission voluntarily icchā-kāreṇa = voluntarily, saṇdisaha = give me the permission, bhagavan! = oh bhagavan! iriyāvahiyam paḍikkamāmi? = shall i perform pratikramaṇa for the sins committed while coming and going? iriyāvahiyam = for the sins committed while coming and going, paḍikkamāmi = shall i perform pratikramaṇa? iccham = i accept your order icchāmi paḍikkamīu = i wish to perform pratikramaṇa icchāmi = i wish, paḍikkamīu = to perform pratikramaṇa 2. iriyāvahiyāe virāhaṇāe = for the faults committed while walking on the way iriyāvahiyāe = committed while walking on the way, virāhaṇāe = for the faults 3. gamaṇāgamaṇe = while coming & going 4. pāṇa-kkamaṇe = by suppressing the living creatures pāṇa = the living creatures, kkamaṇe = by suppressing bīya-kkamaṇe = by suppressing the seeds</p>
---	---

हरिय-क्कमणे उ हरी वनस्पति को दबाने से

हरिय उ हरी वनस्पति को

ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडा-संताणा-संकमणे उ ओस की
बूंद, चींटियों के बिल, पंच वर्णी काई, भीगी मिट्टी, मकड़ी के
जाल को दबाने से

ओसा उ ओस की बूंद, उत्तिंग उ चींटियों के बिल, पणग उ पंच
वर्णी काई, दग उ भीगी, मट्टी उ मिट्टी, मक्कडा उ मकड़ी
के, संताणा उ जाल को, संकमणे उ दबाने से

५. जे मे जीवा विराहिया उ मेरे द्वारा जो जीव दुःखित हुए हों
जे उ जो, मे उ मेरे द्वारा, जीवा उ जीव, विराहिया उ दुःखित
हुए हों

६. एगिंदिया उ एक इंद्रिय इस्पर्शेंद्रियट वाले

एग उ एक, इंदिया उ इंद्रिय वाले

बेइंदिया उ दो इंद्रिय इस्पर्शेंद्रिय और रसनेंद्रियट वाले

बे उ दो

तेइंदिया उ तीन इंद्रिय इस्पर्शेंद्रिय, रसनेंद्रिय और घ्राणेंद्रियट वाले

ते उ तीन

bīya = the seeds

hariya-kkamaṇe = by suppressing the green vegetation

hariya = the green vegetation

osā-uttiṅga-paṇaga-daga-mattī-makkaḍā-santāṇā-saṅkamaṇe = by
suppressing the dew, burrow of ants, moss in five colours, wet soil,
spider's web

osā = the dew, uttiṅga = burrow of ants, paṇaga = moss in five colours,
daga = wet, mattī = soil, makkaḍā = spider's, santāṇā = web,
saṅkamaṇe = by suppressing

5. je me jīvā virāhiyā = living beings which are pained by me

je = which, me = by me, jīvā = living beings, virāhiyā = are pained

6. egindiyā = with one sense organ [sparsēndriya]

ega = one, indiyā = sense organ

beindiyā = with two sense organs [sparsēndriya, rasanendriya]

be = two

teindiyā = with three sense organs [sparsēndriya, rasanendriya and
ghrāṇendriya]

चउरिंदिया उ चार इंद्रिय इस्पशेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय और
चक्षुरिंद्रियट वाले

चउर उ चार

पंचिंदिया उ पाँच इंद्रिय इस्पशेंद्रिय, रसनेंद्रिय, घ्राणेंद्रिय, चक्षुरिंद्रिय
और श्रोत्रेंद्रियट वाले

पंच उ पाँच

७. अभिहया उ पाँव से मारे गये हों

वत्तिया उ धूल से ढके गये हों

लेसिया उ भूमि के साथ कुचले गये हों

संघाइया उ परस्पर शरीर से टकराये गये हों

संघट्टिया उ थोड़ा स्पर्श कराया गया हो

परियाविया उ कष्ट पहुंचाया गया हो

किलामिया उ खेद पहुंचाया गया हो

उद्वविया उ डराये गये हों

ठाणाओ ठाणं संकामिया उ एक स्थान से दूसरे स्थान पर फिराये गये हों

ठाणाओ उ एक स्थान से, ठाणं उ दूसरे स्थान पर, संकामिया उ
फिराये गये हों

जीवियाओ ववरोविया उ प्राण रहित किये गये हों

te = three

caurindiyā = with four sense organs [sparsēndriya, rasanēndriya,
ghrāṇēndriya and cakṣurindriya]

caura = four

pañcindiyā = with five sense organs [sparsēndriya, rasanēndriya,
ghrāṇēndriya, cakṣurindriya and śrotrendriya]

pañca = five

7. abhihayā = are being kicked by feet

vattiyā = are being covered by dust

lesiyā = are being trampled with ground

saṅghāiyā = are being collided with each other with their bodies

saṅghaṭṭiyā = are being touched a little

pariyāviyā = are being troubled

kilāmiyā = are being distressed

uddaviyā = are being frightened

ṭhāṇāo ṭhāṇam saṅkāmiyā = are being shifted from one place to other place

ṭhāṇāo = from one place, ṭhāṇam = to other place, saṅkāmiyā = are
shifted

जीवियाओ उ प्राण, ववरोविया उ रहित किये गये हों
तस्स मिच्छा मि दुक्कडं उ मेरे ये सर्व दुष्कृत्य मिथ्या हों
तस्स उ ये सर्व, मिच्छा उ मिथ्या हों, मि उ मेरे, दुक्कडं उ
दुष्कृत्य

गाथार्थ :-

हे भगवन्! स्वेच्छा से आज्ञा दीजिये. आने-जाने की क्रिया से लगे पाप
का प्रतिक्रमण करूं? आपकी आज्ञा मैं स्वीकार करता हूँ. मैं प्रतिक्रमण
करना चाहता हूँ. १.
...मार्ग में चलते समय हुई जीव विराधना का. २.
...आते जाते समय. ३.
...प्राणियों को दबाने से, बीज को दबाने से, हरी वनस्पति को दबाने से,
ओस की बूंद, चींटियों के बिल, पंच वर्णी काई, भीगी मिट्टी, मकड़ी के
जाल को दबाने से. ४.
...मेरे द्वारा जो जीव मुझसे दुःखित हुए हों. ५.
...एक इंद्रिय वाले, दो इंद्रिय वाले, तीन इंद्रिय वाले, चार इंद्रियवाले, पाँच
इंद्रिय वाले झ्जीवट. ६.
...पाँव से मारे हों, धूल से ढके हों, भूमि के साथ कुचले गये हों, परस्पर

jīviyāo vavaroviyā = are being deprived of life

jīviyāo = life, vavaroviyā = are being deprived of

tassa micchā mi dukkaḍam = all these misdeeds of mine may become fruitless

tassa = all these, micchā = may become fruitless, mi = of mine,

dukkāḍam = misdeeds

Stanzaic meaning :-

Oh bhagavān! voluntarily give me the permission. Shall I perform the
pratikramaṇa for the sins committed while coming and going? I accept your
order. I wish to perform pratikramaṇa. 1.
...for the faults committed while walking on the way. 2.
...while coming and going. 3.
...by suppressing [walking over] the living creatures, by suppressing the seeds,
by suppressing the green vegetation, by suppressing dew, burrow of ants, five
coloured moss, wet soil spider's web. 4.
...living beings which are pained by me. 5.
...[living beings] with one sense organ, with two sense organs, with three sense
organs, with four sense organs, with five sense organs. 6.

शरीर से टकराये गये हों, थोड़ा स्पर्श कराया गया हो, कष्ट पहुंचाया गया हो, खेद पहुंचाया गया हो, डराये गये हों, एक स्थान से दूसरे स्थान पर फिराये गये हों, प्राण रहित किये गये हों, मेरे ये सब दुष्कृत्य मिथ्या हों.
.७.

विशेषार्थ :-

प्रतिक्रमण :- आत्म निरीक्षण द्वारा जीवन का पर्यवलोकन कर अपने से हुई विराधनाओं का पश्चात्ताप पूर्वक भविष्य में पुनः न करने का निर्णय कर, दूषित बनी आत्मा को शुद्ध कर, पुनः आत्म स्वभाव में लाने की क्रिया.

विराधना :- सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र्य रूपी मोक्षमार्ग का पालन न करना अथवा विकृत रूप से पालन करना.

चार प्रकार की विराधना :-

१. अतिक्रम- विराधना के लिये प्रेरित होना.

२. व्यतिक्रम- विराधना करने के लिये तैयार होना.

३. अतिचार- कुछ अंश में विराधना करना.

४. अनाचार- पूर्णतया विराधना का सेवन करना.

प्राणी :- पाँच इंद्रिय, तीन बल इन्द्रिय, वचन, काय बलट, आयुष्य, और

...are being kicked by feet, are being covered by dust, are being trampled with ground, are being collided with each other with their bodies, are being touched a little, are being troubled, are being distressed, are being frightened, are being shifted from one place to another, are being deprived of life; all these misdeeds of mine may become fruitless.7.

Specific meaning :-

pratikramaṇa :- The rite of bringing back the soul into self, purifying the polluted soul inspecting the daily routine of life minutely through introspection and determining not to repeat the guilt committed again in future with repentance.

virāadhanā :- Not to observe or to pervert the path of salvation of right faith, right knowledge and right conduct.

Four types of virāadhanā :-

1. **atikrama-** To get inspired to commit the guilt.

2. **vyatikrama-** To get ready to commit the guilt.

3. **aticāra-** To commit the guilt / misdeed partially.

4. **anācāra-** To commit the guilt completely.

श्वासोच्छ्वास— इन दश प्राणों में से कम से कम चार और अधिक से अधिक दश प्राणों से युक्त आत्मा.

इरियावहियं प्रतिक्रमण के १८,२४,१२० इअठारह लाख चौबीस हजार एक सौ बीसट भेद :-

५६३ जीव के भेद ५० प्रकार की हिंसा **इअभिहया** आदित ३२ कारण इअग-द्वेषट ३ **करण** ३ **योग** ३ काल इअभूत, वर्तमान और भविष्यट ६ साक्षी **इअरिहंत, सिद्ध, साधु, गुरु**, आत्मा और देवट ३ १८,२४,१२०.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र से चलते-फिरते, आते-जाते अपने द्वारा जीव-हिंसा आदि होने के कारण लगे हुए पापों को नष्ट करने के लिये पूर्व क्रिया रूप **मिच्छा मि दुक्कडं** दिया जाता है.

prāṇī [living being] :- A soul having at least four vitals and ten at the most out of ten vitals-- five sense organs, three capabilities / powers [power of thought, speech and action / mind, speech and body], duration of life [age] and breathing.

18,24,120 [eighteen lac twenty four thousand one hundred and twenty] distinctions of iriyāvahiyam pratikramaṇa :-

563 distinctions of living beings x 10 types of violations [such as **abhihayā**] x 2 reasons [attachment and enmity] x 3 **karaṇa** x 3 **yoga** x 3 times [past, present and future] x 6 witnesses [**arihanta, siddha, sādhu, guru**, soul and heavenly god] = 18,24,120.

Introduction of the sūtra :-

As a pre-rite, **micchā mi dukkaḍam** is being said for the sins attached due to the violence etc. of living beings caused by us while walking-moving, going-coming are being destroyed by this **sūtra**.

६. तस्स उत्तरी सूत्र

तस्स उत्तरी-करणेणं, पायच्छित्त-करणेणं,
विसोही-करणेणं, विसल्ली-करणेणं, पावाणं कम्माणं
निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं. १.

शब्दार्थ :-

तस्स उ उनकी इउन पापों की / इरियावहिया सूत्र में बताये पापों कीट

उत्तरी-करणेणं उ फिर से विशेष शुद्धि करने के द्वारा

उत्तरी उ फिर से विशेष शुद्धि, करणेणं उ करने के द्वारा

पायच्छित्त-करणेणं उ प्रायश्चित्त करने के द्वारा इविशेष आलोचना एवं
निंदा करने के द्वाराट

पायच्छित्त उ प्रायश्चित्त

विसोही-करणेणं उ विशुद्धि करने के द्वारा

विसोही उ विशुद्धि

विसल्ली-करणेणं उ शल्य रहित करने के द्वारा

विसल्ली उ शल्य रहित

6. tassa uttarī sūtra

tassa uttarī-karaṇeṇaṃ, pāyacchitta-karaṇeṇaṃ,
visohī-karaṇeṇaṃ, visallī-karaṇeṇaṃ, pāvāṇaṃ kammaṇaṃ
nigghāyaṇaṭṭhāe, ṭhāmi kāussaggam. 1.

Literal meaning :-

tassa = of them [of those sins / of the sins shown in iriyāvahiya sūtra]

uttarī-karaṇeṇaṃ = by rectifying again [by rectifying distinctively]

pāyacchitta-karaṇeṇaṃ = by performing repentance [by special criticising
and censuring]

pāyacchitta = repentance, karaṇeṇaṃ = by performing

visohī-karaṇeṇaṃ = by purifying further

visallī-karaṇeṇaṃ = by making free of thorns

visallī = free of thorns, karaṇeṇaṃ = by making

पावाणं कम्माणं उ पाप कर्मो का

पावाणं उ पाप, कम्माणं उ कर्मो का

निग्घायणट्ठाए उ संपूर्ण नाश करने के लिये

ठामि काउस्सगं उ मैं कायोत्सर्ग करता हूँ

ठामि उ करता हूँ, काउस्सगं उ कायोत्सर्ग

गाथार्थ :-

उन झमापोंट की फिर से शुद्धि करने के द्वारा, प्रायश्चित्त करने के द्वारा, विशुद्धि करने के द्वारा, शल्य रहित करने के द्वारा, पाप कर्मों का संपूर्ण नाश करने के लिये मैं कायोत्सर्ग करता हूँ. १.

विशेषार्थ :-

कायोत्सर्ग :-

१. संकल्प विकल्प रहित होकर मन को धर्म ध्यान में स्थिर रखने के लिये आवश्यक मानसिक प्रवृत्ति एवं सहज कायिक प्रवृत्ति के सिवाय सर्व प्रकार की प्रवृत्ति और शारीरिक ममत्व को मन- वचन-काया से त्याग करना.

२. इरियावहियं प्रतिक्रमण से सामान्य शुद्धि होती है, कायोत्सर्ग से विशेष शुद्धि होती है.

pāvāṇaṃ kammaṇaṃ = of the evil deeds

pāvāṇaṃ = of the evil, kammaṇaṃ = deeds

nigghāyaṇaṭṭhāe = to annihilate completely

ṭhāmi kāussaggaṃ = i perform the kāyotsarga

ṭhāmi = i perform, kāussaggaṃ = the kāyotsarga

Stanzaic meaning :-

I perform kāyotsarga of those [sins] by rectifying again, by performing repentance, by purifying further, by making free of thorns to annihilate the evil deeds completely. 1.

Specific meaning :-

kāyotsarga :-

1. For keeping mind steady in spiritual meditation, becoming free from alternative decisions, to give up all types of activities except essential mental activities and natural physical activities and attachment towards the body by thought, words and deeds.

2. Ordinary purification is done by performing iriyāvahiyam pratikramaṇa, further distinct purification is done by performing the kāyotsarga.

प्रायश्चित्त इम्रायच्छित्त उ पश्चात्ताप / पाप को छेद कर मन शुद्ध करने की क्रिया.

शल्य उ आत्मा में पीड़ा उत्पन्न करने वाले भाव.

तीन प्रकार के शल्य :-

१. मिथ्यात्व शल्य- सत्य तत्त्व को असत्य और असत्य तत्त्व को सत्य मानना.
२. माया शल्य- कपट करना.
३. निदान शल्य- भौतिक इच्छाओं की पूर्ति के रूप में धर्म के फल की इच्छा करना.

सूत्र परिचय :-

इरियावहिया सूत्र से पापों की सामान्य शुद्धि रूप प्रतिक्रमण करने के बाद भी बचे हुए पापों को नाश करने के लिए इविशेष शुद्धि के लिए उत्तर क्रिया रूप काउस्सग्ग के पांच हेतु इस सूत्र में बताये हैं.

prāyaścitta [pāyacchitta] = repentance / the rite of purifying the mind by destroying the sins.

śalya [thorns] = Emotions [thoughts] distressing the soul.

Three types of śalya :-

1. **mithyāṭva śalya**– To believe the right principles as false and wrong principles as right.
2. **māyā śalya**– To commit fraud / to practise deceit.
3. **nidāna śalya**– To seek fulfilment of worldly desires as a result of performance of religious rites.

Introduction of the sūtra :-

As a subsequent rite, in this **sūtra**, five purposes of the **kāussagga** for destroying the sins [for rectifying distinctively] that remain even after performing normal rectification of **pratikramaṇa** of the sins by **iriyāvahiya sūtra** are shown.

७. अन्नत्थ सूत्र

अन्नत्थ-ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलीए,
पित्त-मुच्छाए. १.
सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं,
सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं. २.
एवमाइएहिं आगारेहिं, अ-भग्गो अ-विराहिओ,
हुज्ज मे काउस्सग्गो. ३.
जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं
न पारेमि. ४.
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि. ५.
शब्दार्थ :-

१.अन्नत्थ उ के सिवाय
ऊससिएणं उ श्वास लेने से

7. annattha sūtra

annattha-ūsasieṇam, nīsasieṇam, khāsieṇam, chīeṇam,
jambhāieṇam, uḍḍueṇam, vāya-nisaggeṇam, bhamalīe,
pitta-mucchāe. 1.
suhumehim aṅga-sañcālehim, suhumehim khela-sañcālehim,
suhumehim diṭṭhi-sañcālehim. 2.
evamāiehim āgārehim, a-bhaggo a-virāhio,
hujja me kāussaggo. 3.
jāva arihaṇṭāṇam bhagavantāṇam, namukkāreṇam
na pāremi. 4.
tāva kāyam ṭhāṇeṇam moṇeṇam jhāṇeṇam, appāṇam vosirāmi.
.5.

Literal meaning :-

1.annattha = except with

नीससिएणं उ श्वास छोडने से

खासिएणं उ खांसी आने से

छीएणं उ छींक आने से

जंभाइएणं उ जम्हाई आने से

उड्डुएणं उ डकार आने से

वाय-निसग्गेणं उ अधोवायु निकलने से

वाय उ अधोवायु, निसग्गेणं उ निकलने से

भमलीए उ चक्कर आने से

पित्त-मुच्छाए उ पित्त विकार के कारण मूर्च्छा आने से

पित्त उ पित्त विकार के कारण, मुच्छाए उ मूर्च्छा आने से

२.सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं उ सूक्ष्म रूप से अंग हिलने से

सुहुमेहिं उ सूक्ष्मरूप से, अंग उ अंग, संचालेहिं उ

हिलने से

सुहुमेहिं खेल-संचालेहिं उ सूक्ष्म रूप से कफ और वायु के संचालन से

खेल उ कफ

सुहुमेहिं दिट्ठि-संचालेहिं उ सूक्ष्म रूप से दृष्टि हिलने से

दिट्ठि उ दृष्टि

ūsasienam = by breathing in

nīsasienam = by breathing out

khāsienam = by the occurrence of cough

chīenam = by the occurrence of sneeze

jambhāienam = by the occurrence of yawn

udduenam = by the occurrence of belch

vāya-nisaggenam = by emitting wind through the posterior opening

vāya = wind through the posterior opening, nisaggenam = by emitting

bhamaliē = by the occurrence of giddiness

pitta-mucchāe = by the occurrence of fainting due to the disorder of bile

pitta = due to the disorder of bile, mucchāe = by the occurrence of fainting

2.suhumehim aṅga-sañcālehim = by the subtle / little movement of body

suhumehim = by the subtle / little, aṅga = of body, sañcālehim = movement

suhumehim khela-sañcālehim = by the subtle movement of phlegm and air

khela = of phlegm

३.एवमाइएहिं आगारेहिं उ इत्यादि आगारों इअपवादोंट से
एवम् उ इति, आइएहिं उ आदि, आगारेहिं उ आगारों से

अभग्गो उ अभंग

अविराहिओ उ अविराधित / अखंडित

हुज्ज मे काउस्सग्गो उ मेरा कायोत्सर्ग हो

हुज्ज उ हो, मे उ मेरा, काउस्सग्गो उ कायोत्सर्ग

४.जाव उ जब तक

अरिहंताणं भगवंताणं उ अरिहंत भगवंतों को

अरिहंताणं उ अरिहंत, भगवंताणं उ भगवंतों को

नमुक्कारेणं न पारेमि उ मैं नमस्कार करने के द्वारा इन्नमो अरिहंताणं
कहकरट पूर्ण न करूं

नमुक्कारेणं उ नमस्कार करने के द्वारा, न पारेमि उ पूर्ण न करूं

५.ताव उ तब तक

कायं उ शरीर इक्कायाट को

ठाणेणं उ स्थान पूर्वक इएक स्थान में स्थिरता पूर्वकट

मोणेणं उ मौन पूर्वक

झाणेणं उ ध्यान पूर्वक

अप्पाणं उ अपनी

suhumehim diṭṭhi-sañcālehim = by the subtle movement of eyes
diṭṭhi = eyes

3.evamāiehim āgārehim = with exceptions like

evamāiehim = like, āgārehim = with exceptions

abhaggo = unbroken

avirāhio = not violated / complete

hujja me kāussaggo = my kāyotsarga be

hujja = be, me = my, kāussaggo = kāyotsarga

4.jāva = as long as

arihantāṇam bhagavantāṇam = to the arihanta bhagavantas

arihantāṇam = to the arihanta, bhagavantāṇam = bhagavantas

namukkāreṇam na pāremi = i would not complete by performing obeisance
[saying namo arihantāṇam]

namukkāreṇam = by performing obeisance, na = not, pāremi = complete

5.tāva = till then

kāyam = to the body

ṭhāṇeṇam = at one place [with steadiness in one place]

वोसिरामि उ त्याग करता हूँ

गाथार्थ :-

जब तक अरिहंत भगवंतों को नमस्कार करने के द्वारा इकायोत्सर्गट पूर्ण न करूँ इग्रा. ४ट, तब तक इग्रा. ५ट...

श्वास लेने से, श्वास छोड़ने से, खांसी आने से, छींक आने से, जम्हाई आने से, डकार आने से, अधो वायु निकलने से, चक्कर आने से, पित्त विकार के कारण मूर्च्छा आने से... १.,

...सूक्ष्म रूप से अंग संचालन से, सूक्ष्म रूप से कफ और वायु के संचालन से, सूक्ष्म रूप से दृष्टि के संचालन. २.,

...इत्यादि आगारों से मेरा कायोत्सर्ग अभंग और अविराधित हो ... ३.
इहसलियेट अपनी काया को स्थिरता पूर्वक, मौन पूर्वक इऔरट ध्यान पूर्वक त्याग करता हूँ. ५.

विशेषार्थ :-

आगार उ स्वभाविकता से होनेवाली शारीरिक प्रवृत्तियों का अपवाद

moṇeṇam = with silence

jhāṇeṇam = with meditation

appāṇam = my

vosirāmi = i am relinquishing

Stanzaic meaning :-

As long as I would not complete [the kāyotsarga] by performing obeisance to the arihanta bhagavantas [stanza 4.], till then [stanza 5.]

my kāyotsarga be unbroken and complete except with the exceptions like [stanza 3.]...

...breathing in, breathing out, occurrence of cough, occurrence of sneeze, occurrence of yawn, occurrence of belch, emitting wind through posterior opening, occurrence of giddiness, occurrence of fainting due to bile disorder...

..... 1.,
...subtle movement of the body, subtle movement of phlegm and air, subtle movement of eyes.2.

[Therefore] I am relinquishing my body [by being] with steadiness in one place,

जिससे कायोत्सर्ग भंग न हो.

एवमाइएहिं आगारेहिं / इत्यादि आगार उ १. अग्नि फैलने से, २. हिंसक प्राणी आने से या पंचेंद्रिय प्राणी की हत्या होते रहने से, ३. चोर या राजा का उपद्रव होने से एवं, ४. सर्पदंश होने या होने की संभावना से कायोत्सर्ग का स्थान बदलना. इन चार आगारों का समावेश इत्यादि शब्द से होता है.

अप्पाणं वोसिरामि उ कायोत्सर्ग में रहने तक मैं इआत्माट, अपने पर स्वरूप शरीर की मालिकी को त्याग कर, उसके रक्षण-पोषण से निवृत्त होता हूँ.

कायोत्सर्ग के उन्नीस दोष :-

१. घोड़े की तरह पाँव ऊँचा या टेढ़ा रखना.
२. लता की तरह शरीर को हिलाना.
३. स्तंभ आदि के सहारे खड़े रहना.
४. मस्तक को दिवाल आदि के साथ टेकना.
५. दोनों पाँव परस्पर जोड़ कर खड़ा रहना.
६. पाँव फैलाकर खड़े रहना.
७. गुह्य स्थान पर हाथ रखना.
८. घोड़े की लगाम की तरह चरवला / रजोहरण पकड़ना.

with silence and with meditation.5.

Specific meaning :-

āgāra = Exceptions of natural movements of the body [which can not be controlled] by which **kāyotsarga** would not be treated as broken.

evamāiehim āgārehim / exceptions like = To change the place of **kāyotsarga** due to 1. outbreak of fire. 2. arrival of wild animals or murder of a living being with five sense organs, 3. molestation by a thief or a ruler. 4. snake-bite or its probability. These four exemptions are included by the word etc.

appāṇam vosirāmi = I [the soul] renounce the ownership of my other form [physical existence] of the body and give up its maintenance and nourishment till I am engaged in **kāyotsarga**.

Nineteen defects / short comings of kāyotsarga :-

1. To keep leg up or bent like a horse.
2. To swing the body like a creeper.
3. To stand taking support of a pillar etc.
4. To lean the head upon a wall.

<p>९. वधू की तरह मस्तक झुकाकर रखना. १०. लंबा वस्त्र इनाभि से उपर और घुटनों से नीचे तकट पहनना. ११. शरम से स्त्रियों की तरह छाती को ढक कर रखना. १२. मच्छर के डर से या शरदी के कारण पूरे शरीर को साध्वी की तरह ओढ़कर बैठना. १३. उंगलियों पर संख्या गिनना. १४. काग की तरह नजरें फिराते रहना. १५. वस्त्र खराब होने के डर से संकोचित कर रखना. १६. मस्तक को डोलाना. १७. गूंगे की तरह आवाज करना. १८. मदिरा पान किये हुए की तरह बड़बड़ाहट करना. १९. बंदर की तरह आस पास देखते रहना और होंठ हिलाते रहना. इन उन्नीस दोषों में से साध्वियों को १०. लंबे वस्त्र पहनने का दोष, ११. छाती ढकने का दोष और १२. पूरे शरीर को ओढ़कर बैठने का दोष और श्राविकाओं को ९. मस्तक झुकाकर बैठने का दोष, १० लंबे वस्त्र पहनने का दोष, ११. छाती ढकने का दोष और, १२. पूरे शरीर को ओढ़कर बैठने का दोष नहीं लगता है.</p>	<p>5. To stand keeping both legs joined together. 6. To stand spreading the legs. 7. To keep the hand on private organs of the body. 8. To hold the caravalā / rajoharaṇa like the bridle of a horse. 9. To keep the face down like a bride. 10. To wear a long cloth [above the navel place and below the knees]. 11. To keep the chest covered like woman due to bashfulness. 12. To sit covering the entire body like sādhvī, due to fear of mosquitoes or coldness. 13. To count the numbers on finger tips. 14. To move the eye-balls like a crow. 15. To contract the clothes due to the fear of getting spoiled. 16. To oscillate the head. 17. To make sound like a dumb person. 18. To murmur like a drunkard. 19. To see about and move lips like a monkey. Out of these nineteen defects, 10. the defect of wearing long clothes, 11. defect of covering the chest and 12. defect of sitting covering the entire body are</p>
--	---

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र में काउस्सग्ग करते समय स्वाभाविकतया होनेवाली शारीरिक क्रियाओं से काउस्सग्ग को भंग न होने देने के लिए सोलह आगारों का वर्णन तथा काउस्सग्ग को दृढ़ता पूर्वक पूर्ण करने की मर्यादा बतलायी गयी है.

not related to **sādhvī**s and 9. defect of sitting bending down the head, 10. defect of wearing long clothes, 11. defect of covering the chest and 12. defect of sitting covering the entire body are not related to the **śrāvikās**.

Introduction of the sūtra :-

This **sūtra** contains a description of sixteen **āgāras** [exemptions] for not allowing the **kāussagga** to be broken or upset owing to the body's movement occurring naturally while performing the **kāussagga** and the decorum has been shown to complete the **kāussagga** with firmness.

8. logassa sūtra

लोगस्स उज्जाअ-गरे, धम्म-तित्थ-यरे जिणे.
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली..... १.
उसभ-मजिअं च वंदे,
संभव-मभिणंदणं च सुमइं च.
पउम-प्पहं सुपासं, जिणं च चंद-प्पहं वंदे. २.
सुविहिं च पुप्फ-दंतं, सीअल-सिज्जंस-वासु-पुज्जं च.
विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि. ३.
कुंथुं अरं च मल्लिं,
वंदे मुणि-सुव्वयं नमि-जिणं च.
वंदामि रिट्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च. ४.
एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला पहीण-जर-मरणा.
चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थ-यरा मे पसीयंतु. ५.
कित्ति-य-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा.

[illegible]

सूत्र

आरुग्ग-बोहि-लाभं, समाहि-वर-मुत्तमं-दिंतु.६.

चंदेसु निम्मल-यरा, आइच्चेसु अहियं पयास-यरा.

सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु.७.

शब्दार्थ :-

१.लोगस्स उज्जोअ-गरे उ लोक में उद्द्योत झ्रकाशट करने वाले / लोक में स्थित सर्व द्रव्यों के यथार्थ स्वरूप को प्रगट करने वाले

लोगस्स उ लोक में, उज्जोअ उ उद्द्योत, गरे उ करने वाले

धम्म-तित्थ-यरे उ धर्म रूपी तीर्थ का प्रवर्तन करने वाले

धम्म उ धर्म रूपी, तित्थ उ तीर्थ का, यरे उ प्रवर्तन करने वाले

जिणे उ झ्राग द्वेषादि केट विजेता की

अरिहंते उ त्रैलोक्य पूज्यों की

कित्तइस्सं उ स्तुति करुंगा

चउवीसं पि केवली उ चौबीसों केवलियों की

चउवीसं पि उ चौबीसों, केवली उ केवलियों की

२.उसभ-मज्झिअं च वंदे उ श्री ऋषभदेव और श्री अजितनाथ को मैं वंदन करता हूँ

ārugga-bohi-lābham, samāhi-vara-muttamaṃ-dintu.6.

candesu nimmla-yarā, āiccesu ahiyaṃ payāsa-yarā.

sāgara-vara-gambhīrā, siddhā siddhiṃ mama disantu.7.

Literal meaning :-

1.logassa ujjoa-gare = the enlighteners of the universe / the revealers of true nature of all the objects existing in the universe

logassa = of the universe, ujjoagare = the enlighteners

dhamma-tittha-yare = the establishers of religious order [path of salvation in the from of religion]

dhamma-tittha = of religious order, yare = the establishers

jiṇe = of the conquerors [of attachment, hatred etc.]

arihante = worth worshipable in three worlds

kittaissam = i will eulogize

cauvisam pi kevali = all of twenty four kevalis

cauvisam = twenty four, pi = all of, kevali = kevalis

2.usabha-majiam ca vande = i am obeisancing to śrī ṛṣabhadeva and śrī ajitanātha

सूत्र

उसभं उ श्री ऋषभदेव, अजिअं उ श्री अजितनाथ को, च उ
और, वंदे उ मैं वंदन करता हूँ

संभव-मभिणंदणं च उ श्री संभवनाथ और श्री अभिनंदन स्वामी को

संभवं उ श्री संभवनाथ, अभिणंदणं उ श्री अभिनंदन स्वामी को

सुमइं च उ और श्री सुमतिनाथ को

सुमइं उ श्री सुमतिनाथ को

पउम-प्पहं सुपासं उ श्री पद्मप्रभ स्वामी को, श्री सुपार्श्वनाथ को

पउमप्पहं उ श्री पद्मप्रभ स्वामी को, सुपासं उ श्री सुपार्श्वनाथ
को

जिणं च चंद-प्पहं वंदे उ और श्री चंद्रप्रभ जिनेश्वर को मैं वंदन
करता हूँ

जिणं उ जिनेश्वर को, चंदप्पहं उ श्री चंद्रप्रभ

३.सुविहिं च पुप्फ-दंतं उ श्री सुविधिनाथ यानि श्री पुष्पदंत इश्री
सुविधिनाथ का दूसरा नामट को

सुविहिं उ श्री सुविधिनाथ, च उ यानि, पुप्फदंतं उ श्री पुष्पदंत

usabham = to śrī ṛṣabhadeva, ajiam = śrī ajitanātha, ca = and, vande = i
am obeisancing

sambhava-mabhiṇaṇḍaṇam ca = to śrī sambhavanātha and śrī
abhinandana svāmī

sambhavam = to śrī sambhavanātha, abhiṇaṇḍaṇam = śrī abhinandana
svāmī

sumaim ca = and to śrī sumatinātha

sumaim = to śrī sumatinātha

pauma-ppaham supāsam = to śrī padmaprabha svāmī, to śrī
supārśvanātha

paumappaham = to śrī padmaprabha svāmī, supāsam = to śrī
supārśvanātha

jiṇam ca canda-ppaham vande = and i am obeisancing to śrī candraprabha
jineśvara

jiṇam = jineśvara, candappaham = to śrī candraprabha

3.suvihim ca puppha-dantaṁ = to śrī suvidhinātha or śrī puṣpadanta [the
other name of śrī suvidhinātha]

suvihim = to śrī suvidhinātha, ca = or, pupphadantaṁ = śrī puṣpadanta

<p>सूत्र को</p> <p>सीअल-सिज्जंस-वासु-पुज्जं च उ श्री शीतलनाथ, श्री श्रेयांसनाथ और श्री वासुपूज्य स्वामी को</p> <p>सीअल उ श्री शीतलनाथ, सिज्जंस उ श्री श्रेयांसनाथ, वासुपुज्जं उ श्री वासुपूज्य स्वामी को</p> <p>विमल-मणंतं च जिणं उ श्री विमलनाथ और श्री अनंतनाथ जिनेश्वर को</p> <p>विमलं उ श्री विमलनाथ, अणंतं उ श्री अनंतनाथ</p> <p>धम्मं संतिं च वंदामि उ श्री धर्मनाथ और श्री शांतिनाथ को मैं वंदन करता हूँ</p> <p>धम्मं उ श्री धर्मनाथ, संतिं उ श्री शांतिनाथ को, वंदामि उ मैं वंदन करता हूँ</p> <p>४.कुंथुं अरं च मल्लिं उ श्री कुंथुनाथ, श्री अरनाथ और श्री मल्लिनाथ को</p> <p>कुंथुं उ श्री कुंथुनाथ, अरं उ श्री अरनाथ, मल्लिं उ श्री मल्लिनाथ को</p> <p>वंदे मुणि-सुव्वयं नमि-जिणं च उ श्री मुनिसुव्रत स्वामी और श्री नमिनाथ जिनेश्वर को मैं वंदन करता हूँ</p>	<p>sīala-sijjansa-vāsu-pujjam ca = to śrī śīṭalanātha, śrī śreyāṇsanātha and śrī vāsupūjya svāmī</p> <p>sīala = to śrī śīṭalanātha, sijjansa = śrī śreyāṇsanātha, vāsu-pujjam = śrī vāsupūjya svāmī</p> <p>vimala-maṇantaṁ ca jiṇaṁ = to śrī vimalanātha and śrī anantaṇātha jineśvara</p> <p>vimalaṁ = to śrī vimalanātha, aṇantaṁ = śrī anantaṇātha</p> <p>dhammaṁ santim ca vandaṁmi = i am obeisancing to śrī dharmanātha and to śrī śāntinātha</p> <p>dhammaṁ = to śrī dharmanātha, santim = to śrī śāntinātha, vandaṁmi = i am obeisancing</p> <p>4.kunthum aram ca mallim = to śrī kunthunātha, śrī aranātha and śrī mallinātha</p> <p>kunthum = to śrī kunthunātha, aram = śrī aranātha, mallim = śrī mallinātha</p> <p>vande muṇi-suvvayaṁ nami-jiṇaṁ ca = i am obeisancing to śrī munisuvrata svāmī and śrī naminātha jineśvara</p>
---	---

सूत्र

मुणि-सुव्वयं उ श्री मुनिसुव्रत स्वामी, नमि उ श्री नमिनाथ

वंदामि उ मैं वंदन करता हूँ

रिट्ठ-नेमिं उ श्री अरिष्ट नेमि इन्नेमिनाथट को

पासं तह वद्धमाणं च उ और श्री पार्श्वनाथ तथा श्री वर्धमान

इमहावीरट स्वामी को

पासं उ श्री पार्श्वनाथ, तह उ तथा, वद्धमाणं उ श्री वर्धमान

स्वामी को

५.एवं मए अभिथुआ उ इस प्रकार मेरे द्वारा स्तुति किये गये

एवं उ इस प्रकार, मए उ मेरे द्वारा, अभिथुआ उ स्तुति किये गये

विहुय-रय-मला उ कर्म रूपी रज इन्नये बंधने वाले कर्मट और मल

इमहले बंधे हुए कर्मट से रहित

विहुय उ से रहित, रय उ रज, मला उ मल

पहीण-जर-मरणा उ वृद्धावस्था और मृत्यु से मुक्त

पहीण उ मुक्त, जर उ वृद्धावस्था, मरणा उ मृत्यु से

चउ-वीसं पि जिणवरा उ चौबीसों जिनेश्वर

जिणवरा उ जिनेश्वर

तिथ-यरा उ तीर्थ के प्रवर्तक

यरा उ प्रवर्तक

muṇi-suvvayam = to śrī munisuvrata svāmī, nami = śrī naminātha

vandāmi = i am obeisancing

ritṭha-nemim = to śrī ariṣṭa nemi [neminātha]

pāsam taha vaddhamāṇam ca = and to śrī pārśvanātha and śrī

vardhamāna [mahāvīra] svāmī

pāsam = to śrī pārśvanātha, taha = and, vaddhamāṇam = śrī

vardhamāna svāmī

5.evam mae abhithuā = in this way eulogized by me

evam = in this way, mae = by me, abhithuā = eulogized

vihuya-aya-malā = free from particles of dust [newly binding karma] and filth
[karma bounded before] of karma

vihuya = free from, aya = dust, malā = filth

pahīṇa-jara-maraṇā = free from old age and death

pahīṇa = free from, jara = old age, maraṇā = death

cau-vīsam pi jiṇavarā = all the twenty four jineśvara

jiṇavarā = jineśvara

tittha-yarā = the propagators of the religious order [path of salvation]

सूत्र

मे पसीयंतु उ मेरे उपर प्रसन्न हों
 मे उ मेरे उपर, पसीयंतु उ प्रसन्न हों
 ६. कित्ति-वंदिय-महिया उ कीर्तन-वंदन-पूजन किये गए हैं
 कित्ति उ कीर्तन, वंदिय उ वंदन, महिया उ पूजन किये गए हैं
 जे ए उ जो ये
 जे उ जो, ए उ ये
 लोगस्स उत्तमा सिद्धा उ लोक में उत्तम हैं, सिद्ध हैं
 उत्तमा उ उत्तम हैं, सिद्धा उ सिद्ध हैं
 आरुग्ग-बोहि-लाभं उ आरोग्य इमोक्षट के लिये बोधि लाभ इसम्यक्त्वट

 आरुग्ग उ आरोग्य के लिये, बोहिलाभं उ बोधि लाभ
 समाहि-वर-मुत्तमं-दिंतु उ उत्तम भाव समाधि प्रदान करें
 समाहि-वरं उ भाव समाधि, उत्तमं उ उत्तम, दिंतु उ प्रदान करें

 ७. चंदेसु निम्मल-यरा उ चंद्रों से अधिक निर्मल
 चंदेसु उ चंद्रों से, निम्मल उ निर्मल, यरा उ अधिक
 आइच्चेसु अहियं पयास-यरा उ सूर्यों से अधिक प्रकाशमान
 आइच्चेसु उ सूर्यों से, अहियं उ अधिक, पयासयरा उ प्रकाशमान

yarā = the propagators of
 me pasīyantu = be pleased over me
 me = over me, pasīyantu = be pleased
 6. kittiya-vandīya-mahiyā = are praised, obeisanced and worshipped
 kittiya = are praised, vandiya = obeisanced, mahiyā = worshipped
 je e = those who
 je = who, e = those
 logassa uttamā siddhā = are great in the universe, are emancipated [liberated]
 uttamā = are great, siddhā = emancipated
 ārugga-bohi-lābham = bodhi lābha [seed of attaining complete perfect
 spiritual knowledge / right faith] for spiritual health [salvation]
 ārugga = for health, bohi lābham = bodhi lābha
 samāhi-vara-muttamam-dintu = may bestow the highest state of contemplation
 samāhivaram = state of contemplation, uttamam = highest, dintu = may
 bestow
 7. candesu nimmala-yarā = more clear than the moons
 candesu = than the moons, nimmala = clear, yarā = more
 āiccesu ahiyam payāsa-yarā = more luminous than the suns

सूत्र

सागर-वर-गंभीरा उ श्रेष्ठ सागर इव्वयंभू-रमण समुद्रट से अधिक

गंभीर

सागर उ सागर से, वर उ श्रेष्ठ, गंभीरा उ गंभीर

सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु उ सिद्ध भगवंत मुझे सिद्धि इमुक्तिट प्रदान करें

सिद्धा उ सिद्ध भगवंत, सिद्धि उ सिद्धि, मम उ मुझे, दिसंतु उ प्रदान करें

गाथार्थ :-

लोक में प्रकाश करने वाले, धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करने वाले, राग-द्वेषादि के विजेता एवं त्रैलोक्य पूज्य चौबीसों केवलियों की मैं स्तुति करूंगा. १.

श्री ऋषभदेव, श्री अजितनाथ, श्री संभवनाथ, श्री अभिनंदन स्वामी और श्री सुमतिनाथ को मैं वंदन करता हूँ. श्री पद्मप्रभ स्वामी, श्री सुपार्श्वनाथ और श्री चंद्रप्रभ जिनेश्वर को मैं वंदन करता हूँ. २.

श्री सुविधिनाथ यानि श्री पुष्पदंत, श्री शीतलनाथ, श्री श्रेयांसनाथ, श्री वासुपूज्य स्वामी, श्री विमलनाथ, श्री अनंतनाथ, श्री धर्मनाथ और श्री शांतिनाथ जिनेश्वर को मैं वंदन करता हूँ. ३.

āiccesu = than the suns, ahiyam = more, payāsayarā = luminous
sāgara-vara-gambhīrā = more serene / deeper than the best / great ocean

[svayambhū-ramaṇa samudra]

sāgara = ocean, vara = best, gambhīrā = more serene

siddhā siddhim mama disantu = siddha bhagavantas shall bestow me the salvation

siddhā = siddha bhagavantas, siddhim = the salvation, mama = me,

disantu = shall bestow

Stanzaic meaning :-

I will eulogize all of twenty four kevalīs, the enlighteners of the universe, the establishers of religious order, the conquerors and worth worshipable in three worlds. 1.

I am obeisancing to śrī ṛṣabhadeva, śrī ajitanātha, śrī sambhavanātha, śrī abhinandana svāmī and śrī sumatinātha. I am obeisancing to śrī padmaprabha svāmī, śrī supārśvanātha and śrī candraprabha jineśvara. 2.

I am obeisancing to śrī suvidhinātha or śrī puṣpadanta, śrī śīṭalanātha, śrī śreyānsanātha, śrī vāsupūjya svāmī, śrī vimalanātha, śrī anantanātha, śrī

सूत्र

श्री कुंथुनाथ, श्री अरनाथ, श्री मल्लिनाथ, श्री मुनिसुव्रत स्वामी और श्री नमिनाथ जिनेश्वर को मैं वंदन करता हूँ. श्री अरिष्ट नेमि, श्री पार्श्वनाथ और श्री वर्धमान स्वामी को मैं वंदन करता हूँ.4.
 इस प्रकार मेरे द्वारा स्तुति किये गये, कर्म रूपी रज और मल से रहित, वृद्धावस्था और मृत्यु से मुक्त, तीर्थ के प्रवर्तक चौबीसों जिनेश्वर मेरे उपर प्रसन्न हों.5.
 जो ये कीर्तन-वंदन-पूजन किये गए हैं, लोकोत्तम हैं, सिद्ध हैं, वे आरोग्य के लिये बोधि लाभ और उत्तम भाव समाधि प्रदान करें.6.

चंद्रों से अधिक निर्मल, सूर्यों से अधिक प्रकाशवान, श्रेष्ठ सागर से अधिक गंभीर सिद्ध भगवंत मुझे सिद्धि प्रदान करें.7.

विशेषार्थ :-

केवली उ महान व्यक्ति जो केवल ज्ञान द्वारा संपूर्ण लोक और अलोक को जानते और देखते हैं.

चउवीसं पि केवली- 'पि' पद से अन्य क्षेत्रों के इज्जंबू द्वीप, धातकी खंड और अर्ध पुष्कर-वर द्वीप में स्थित भरत, ऐरावत और महाविदेह केट एवं भूत, भविष्य और वर्तमान काल के सर्व तीर्थकरों को वंदन किया

dharmanātha and śrī śāntinātha jineśvara.3.
 I am obeisancing to śrī kunthunātha, śrī aranātha, śrī mallinātha, śrī munisuvrata svāmī and śrī neminātha jineśvara. I am obeisancing to śrī ariṣṭa nemi, śrī pārśvanātha and śrī vardhamāna svāmī.4.
 In this way, all the twenty four jineśvaras free from particles of dust and filth of karma, free from old age and death, eulogized by me, be pleased over me.5.
 Those who are praised, obeisanced and worshipped, are great in the universe, are liberated may bestow bodhi lābha [right faith] for spiritual health and highest state of contemplation.6.
 siddha bhagavantas more clear than the moons, more luminous than the suns, more serene / deeper than the best ocean shall bestow me the salvation. .7.

Specific meaning :-

kevalī = Great persons who knows and sees the entire loka [universe] and aloka [region beyond the universe] through kevala jñāna.

cauṽisam pi kevalī- By the phrase pi, obeisance is being offered to all the tīrthaṅkaras of past, present and future epochs [era] and also of other regions

<p>सूत्र जाता है. धर्म उ दुर्गति में पड़ते हुए जीवों को रोक कर मोक्ष अथवा शुभ गति में पहुँचाने वाला अनुष्ठान. तीर्थ उ संसार समुद्र से तारने वाला साधन. सूत्र परिचय :- इस सूत्र में नाम पूर्वक चौबीस तीर्थकरों की तथा गर्भित रूप में तीनों काल के सर्व तीर्थकरों की स्तुति की गयी है एवं सम्यग्-दर्शन-ज्ञान-चारित्र रूप रत्न-त्रयी द्वारा मोक्ष प्राप्ति की प्रार्थना की गयी है.</p>	<p>[bharata, airāvata and mahāvideha present in jambū dvīpa (island), dhātakī khaṇḍa and half puṣkaravara dvīpa]. dharma– Performance of rites / deeds leading to salvation or good estate after death, preventing the living beings [souls] from falling into evil estate. tīrtha = The mean helping to crossover the ocean of world / life. Introduction of the sūtra :— In this sūtra, the glorification of twenty four tīrthaṅkaras by name and all the tīrthaṅkaras of three phases of time by implication is being done and a prayer is being made for the attainment of salvation by means of three gems of right vision, right knowledge and right conduct.</p>
--	--

९. करेमि भंते सूत्र

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि,
जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं, ति-विहेणं,
मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि,
तस्स भंते! पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि,
अप्पाणं वोसिरामि. १.

शब्दार्थ :-

करेमि भंते! सामाइयं उ हे भगवन्! मैं सामायिक करता हूँ
करेमि उ मैं करता हूँ, भंते उ हे भगवन्!, सामाइयं उ सामायिक
सावज्जं जोगं पच्चक्खामि उ सावद्य झ्मापवालीट योग झ्मवृत्तिट का
मैं पच्चक्खाण झ्मतिज्ञा पूर्वक त्यागट करता हूँ
सावज्जं उ सावद्य, जोगं उ योग का, पच्चक्खामि उ मैं
पच्चक्खाण करता हूँ
जाव नियमं पज्जुवासामि उ जब तक मैं नियम का सेवन करता हूँ
जाव उ जब तक, नियमं उ नियम का, पज्जुवासामि उ सेवन

9. karemi bhante sūtra

karemi bhante! sāmāiyam sāvajjam jogam paccakkhāmi,
jāva niyamam pajjuvāsāmi, duviham, ti-viheṇam,
maṇeṇam, vāyāe, kāeṇam, na karemi, na kāravemi,
tassa bhante! paḍikkamāmi, nindāmi, garihāmi,
appāṇam vosirāmi. 1.

Literal meaning :-

karemi bhante! sāmāiyam = oh bhagavan! i am performing the sāmāyika
karemi = i am performing, bhante = oh bhagavan!, sāmāiyam = the
sāmāyika
sāvajjam jogam paccakkhāmi = i am taking the paccakkhāṇa [giving up by
vow] of sinful activities
sāvajjam = sinful, jogam = activities, paccakkhāmi = i am taking the
paccakkhāṇa
jāva niyamam pajjuvāsāmi = as long as i abide the vow

करता हूँ
दुविहं तिविहेणं उ दो प्रकार से और तीन प्रकार से
दु उ दो, विहं उ प्रकार से, ति उ तीन, विहेणं उ प्रकार से
मणेणं वायाए काएणं उ मन से, वचन से और काया इशरीरट से
मणेणं उ मन से, वायाए उ वचन से, काएणं उ काया से
न करेमि न कारवेमि उ न करूँ और न कराऊँ
न उ न, करेमि उ करूँ, कारवेमि उ कराऊँ
तस्स उ उनका इउन पाप प्रवृत्तियों काट
भंते! उ हे भगवन्!
पडिक्कमामि उ मैं प्रतिक्रमण करता हूँ
निंदामि उ मैं निंदा करता हूँ
गरिहामि उ मैं गर्हा करता हूँ
अप्पाणं वोसिरामि उ इम्रापवलीट आत्मा का मैं त्याग करता हूँ
अप्पाणं उ आत्मा का, वोसिरामि उ मैं त्याग करता हूँ
गाथार्थ :-
हे भगवन्! मैं सामायिक करता हूँ. जब तक मैं नियम का पालन करता हूँ
इतब तकट सावद्य योग का दो प्रकार से- न करूँ और न कराऊँ और

jāva = as long as, niyamam = the vow, pajjuvāsāmi = i abide
duviam tivilienam = in two ways and three ways
du = two, vham = ways, ti = three, vilienam = ways
manenam vāyāe kāenam = by thought, by word and by action
manenam = by thought, vāyāe = by word, kāenam = by action
na karemi na kāravemi = i would not do and would not make [others] to do
na = would not, karemi = do, kāravemi = make to do
tassa = of them [of those sinful activities]
bhante! = oh bhagavan!
paḍikkamāmi = i am performing the pratikramaṇa
nindāmi = i am condemning
garihāmi = i am censuring
appāṇam vosirāmi = i am relinquishing the [sinful] soul
appāṇam = the soul, vosirāmi = i am relinquishing
Stanzaic meaning :-
Oh bhagavan! I am performing the sāmāyika. As long as I abide the vow, [so long]

तीन प्रकार से— मन, वचन और काया से **पच्चक्खाण** करता हूँ, हे **भगवन्!** उनका मैं **प्रतिक्रमण** करता हूँ, निंदा करता हूँ, मैं गर्हा करता हूँ और मैं झप्पापवालीट आत्मा का त्याग करता हूँ.

विशेषार्थ :-

सामायिक उ समभाव का लाभ / आत्मा की अनादि कालीन विषम स्थिति को दूर कर, सर्व जीवों के प्रति राग-द्वेष को नष्ट कर, स्व आत्म समान भाव रखते हुए सम्यग् दर्शन— ज्ञान और चारित्र का एकीकरण करना.

मन उ आत्मा से भिन्न, शरीर व्यापी, पुद्गल द्रव्य से निर्मित, आत्मा द्वारा चिंतन-मनन करने का साधन / संकल्प विकल्प करने वाली नोइंद्रिय.

निंदा उ मन, वचन या काया से गलत प्रवृत्ति को गलत मानकर पश्चात्ताप करना और उस गलती को पुनः न करने का संकल्प करना.

गर्हा उ अपनी गलती को गुरु आदि के समक्ष स्वीकार कर, मन से पश्चात्ताप करते हुए भविष्य में उस गलती को पुनः न करने का संकल्प पूर्वक निवेदन करना.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र में **सामायिक** ग्रहण करने का और सावद्य योग रूप पाप का त्याग

I am taking the **paccakkhāṇa** of sinful activities in two ways-- would not do and would not make others to do and in three ways-- by thought, by word and by action. Oh **bhagavan!** I am performing the **pratikramaṇa**, I am condemning, I am censuring them and I am relinquishing the [sinful] soul.

Specific meaning :-

sāmāyika = Benefit of equanimity / To integrate right faith, knowledge and conduct, warding off the disgraceful situation since times immemorial of the soul destroying attachment and malice against all living creatures keeping the feelings of to be like one's own self.

mana = Mind / The mean distinct from soul, pervading throughout the body, composed of physical matters and a mean for contemplation and reflection by the soul / A non-organ making alternative and final decision.

nindā = Condemn / To repent accepting the improper activities as wrong with heart, speech or body and determinate not to repeat that mistake again.

garhā = Censure / To accept guilt before the preceptor etc. and to submit not to repeat the guilt in future, with firm determination and heartily repentance.

करने का पच्चक्खाण है. अर्थात् मन-वचन-काया से कोई भी पाप न करने, न कराने एवं **सामायिक** के नियम तक समभाव में रहने का बतलाया है.

Introduction of the sūtra :-

In this **sūtra**, there is a vow to under take **sāmāyika** and to relinquish the sin of harmful deeds. In other words, not to do or promote any sin by thought, word or deed and to be in equanimity till the vow of **sāmāyika** is shown.

सूत्र

१०. सामाइय-वय-जुत्तो सूत्र

सामाइय-वय-जुत्तो, जाव मणे होइ नियम-संजुत्तो.

छिन्नइ असुहं कम्मं, समाइय जत्तिआ वारा. १.

सामाइयम्मि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा.

एएण कारणेणं, बहुसो सामाइयं कुज्जा. २.

सामायिक विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया,

विधि में जो कोई अविधि हुई हो,

उन सबका मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं. . ३.

दस मन के, दस वचन के, बारह काया के-

इन बत्तीस दोषों में से जो कोई दोष लगा हो,

उन सबका मन-वचन-काया से मिच्छा मि दुक्कडं. . ४.

शब्दार्थ :-

१.सामाइय-वय-जुत्तो उ सामायिक व्रत झ्मच्चक्खाणट से युक्त है
सामाइय उ सामायिक, वय उ व्रत से, जुत्तो उ युक्त

10. sāmāiya-vaya-jutto sūtra

sāmāiya-vaya-jutto, jāva maṇe hoi niyama-sañjutto.

chinnai asuham kammam, samāiya jattiā vārā.1.

sāmāiyammi u kae, samaṇo iva sāvaō havai jamhā.

eeṇa kāraṇeṇam, bahuso sāmāiyam kujjā.2.

sāmāyika vidhi se liyā, vidhi se pūrṇa kiyā,

vidhi me, jo koī avidhi huī ho,

una sabakā mana-vacana-kāyā se micchā mi dukkaḍam.3.

dasa mana ke, dasa vacana ke, bāraha kāyā ke-

ina battisa doṣo me se jo koī doṣa lagā ho,

una sabakā mana-vacana-kāyā se micchā mi dukkaḍam.4.

Literal meaning :-

1.sāmāiya-vaya-jutto = is in sāmāyika vrata [vow]

sāmāiya = sāmāyika, vaya = vrata, jutto = is in

सूत्र

जाव मणे होइ नियम-संजुतो उ जहां तक इसामायिक व्रत धारी काट
 मन नियम इव्रतट से युक्त है
 जाव उ जहां तक, मणे उ मन, होइ उ है, नियम उ नियम से,
 संजुतो उ युक्त
 छिन्नइ असुहं कम्मं उ अशुभ कर्मो को नाश करता है
 छिन्नइ उ नाश करता है, असुहं उ अशुभ, कम्मं उ कर्मो को
 सामाज्य जत्तिआ वारा उ जितनी बार सामायिक करता है
 सामाज्य उ सामायिक करता है, जत्तिआ उ जितनी, वारा उ बार
 २.सामाज्यम्मि उ कए उ सामायिक करने पर तो
 सामाज्यम्मि उ सामायिक, उ उ तो, कए उ करने पर
 समणो इव सावओ हवइ उ श्रावक श्रमण के समान होता है
 समणो उ श्रावक के, इव उ समान, सावओ उ श्रावक, हवइ उ
 होता है
 जम्हा उ क्योंकि
 एएण कारणेणं बहुसो समाज्यं कुज्जा उ इसलिए सामायिक अनेक
 बार करना चाहिये
 एएण कारणेणं उ इसलिए, बहुसो उ अनेक बार, सामाज्यं उ
 सामायिक, कुज्जा उ करना चाहिए

jāva maṇe hoi niyama-sañjutto = as long as the mind [of performer of
 sāmāyika] is in the vow
 jāva = as long as, maṇe = the mind, hoi = is, niyama = the vow, sañjutto
 = in
 chinnaī asuham kammam = destroys the evil karmas
 chinnaī = destroys, asuham = evil, kammam = karmas
 sāmāiya jattīā vārā = performs sāmāyika as many times
 sāmāiya = performs sāmāyika, jattīā = as many, vārā = times
 2.sāmāiyammi u kae = moreover, while performing the sāmāyika
 sāmāiyammi = the sāmāyika, u = moreover, kae = while performing
 samaṇo iva sāvao havai = śrāvaka will be like a śramaṇa
 samaṇo = a śramaṇa, iva = like, sāvao = śrāvaka, havai = will be
 jamhā = because
 eeṇa kāraṇeṇam bahuso samāiyam kujjā = therefore sāmāyika must be
 performed many times
 eeṇa kāraṇeṇam = therefore, bahuso = many times, sāmāiyam =

सूत्र

३.सामायिक विधि से लिया उ सामायिक विधि के अनुसार लिया

विधि से उ विधि के अनुसार

विधि से पूर्ण किया उ इसामायिक विधि के अनुसार पूर्ण किया

विधि में उ इसामायिक कीट विधि इकरते समयट में
जो कोई अविधि हुई हो उ जो कोई गलती हुई हो
अविधि उ गलती

उन सबका उ उन सबका इन्ने सबट

मन-वचन-काया से उ मन-वचन-काया से

मिच्छा मि दुक्कडं उ मेरे दुष्कृत्य मिथ्या हों

मिच्छा उ मिथ्या हों, मि उ मेरे, दुक्कडं उ दुष्कृत्य

४.दस मन के उ मन से लगने वाले दस प्रकार के दोष

sāmāyika, kujjā = must be performed

3.sāmāyika vidhi se liyā = have taken the sāmāyika according to the procedure

sāmāyika = the sāmāyika, vidhi = the procedure, se = according to, liyā = have taken

vidhi se pūrṇa kiya = have completed [the sāmāyika] according to the procedure

pūrṇa kiya = have completed

vidhi me = in [performing] the procedure of [sāmāyika]

jo koī avidhi huī ho = which ever faults might have been committed

jo koī = which ever, avidhi = faults, huī ho = might have been committed

una sabakā = all those

una = those, sabakā = all

mana-vacana-kāyā se = with thoughts, words and deeds

mana = thoughts, vacana = words, kāyā = deeds, se = with

micchā mi dukkaḍam = faults of mine may become fruitless

micchā = faults, mi = of mine, dukkaḍam = may become fruitless

4.dasa mana ke = ten types of faults committed by thinking

सूत्र

देस वचन के उ बोलने से लगने वाले दश प्रकार के दोष

बारह काया के उ शरीर से होने वाले बारह प्रकार के दोष

इन बत्तीस दोषों में से उ इन बत्तीस दोषों में से

जो कोई दोष लगा हो उ जो कोई दोष लगा हो

गाथार्थ :-

जहाँ तक इसासायिक व्रत धारी काट मन सामायिक व्रत के नियम से युक्त है और जितनी बार सामायिक करता है, इवहां तक और उतनी बार वहट अशुभ कर्मों का नाश करता है. १.

सामायिक करने पर तो श्रावक श्रमण के समान होता है. इस लिये सामायिक अनेक बार करना चाहिये. २.

सामायिक विधि से लिया, विधि से पूर्ण किया परन्तु विधि करते समय जो कोई अविधि हुई हो, मन-वचन-काया से मेरे वे सब दुष्कृत्य मिथ्या हों. ३.

dasa = ten, mana ke = of thinking

dasa vacana ke = ten types of faults committed by speaking

vacana ke = of speaking

bāraha kāyā ke = twelve types of faults committed by activities

bāraha = twelve, kāyā ke = of activities

ina battisa doṣo me se = out of these thirty two faults

ina = these, battisa = thirty two, doṣo = faults, me se = out of

jo koī doṣa lagā ho = any of the faults committed

doṣa = faults, lagā ho = committed

Stanzaic meaning :-

As long as the mind [of the performer of sāmāyika] is in sāmāyika vow and performs sāmāyika as many times, [so long and so many times, he] destroys the evil karmas. 1.

More over the śrāvaka will be like a śramaṇa while performing the sāmāyika. Therefore sāmāyika must be performed many times. 2.

[I] have taken the sāmāyika according to procedure, [I] have completed according to procedure, but while performing the procedure, which ever faults

सूत्र

मन के दस, वचन के दस, और काया के बारह— इन बत्तीस दोषों में से जो कोई दोष लगा हो, मेरे वे सब दुष्कृत्य मन-वचन-काया से मिथ्या हों.
४.

विशेषार्थ :-

श्रावक :- साधु के समीप जाकर, जिन वचन को सुनकर एवं उनके मार्गदर्शनानुसार सदाचारी जीवन व्यतीत करने वाला व्रतधारी गृहस्थ.

अविधि उ विधि से विपरीत कार्य / आधी अधूरी विधि / अविवेक पूर्ण विधि.

सामायिक के बत्तीस दोष :-

◆ **मन के दस दोष :-**

१. सामायिक में आत्महित सिवाय का विचार करना.
२. सामायिक द्वारा यश की इच्छा करना.
३. सामायिक द्वारा धनादि की इच्छा करना.
४. अन्य से अच्छी सामायिक करने का गर्व करना.
५. भय से सामायिक करना.
६. सामायिक कर सांसारिक फल का निदान करना.
७. सामायिक के फल में शंका करना.

might have been committed, all those faults of mine may become fruitless with thoughts, words and deeds.3.

Any of the faults committed out of thirty two faults-- ten by thinking, ten by speaking and twelve by activities, all those faults of mine may become fruitless with thoughts, words and deeds.4.

Specific meaning :-

śrāvaka :- A house holder observing religious vows, going nearer [coming in closer contact with] the **sādhu**, hearing the preaching of **jina** and leading a moral life according to their guidance.

avidhi = Act contrary to the procedure / incomplete procedure / immodest procedure

Thirty two faults of the sāmāyika :-

◆ **Ten faults of thinking :-**

1. To think of things other than well-being of the soul in **sāmāyika**.
2. To desire fame through **sāmāyika**.
3. To desire material benefits like wealth through **sāmāyika**.
4. To feel pride of performing **sāmāyika** better than others.

सूत्र

८. सामायिक में क्रोध करना या क्रोध से सामायिक करना.
 ९. अश्रद्धा या अविनय से सामायिक करना.
 १०. अबहुमान, अभक्ति या अनुत्साह से सामायिक करना.

◆ वचन के दश दोष :-

१. कठोर, अप्रिय या असत्य वचन बोलना.
 २. बिना विचारे बोलना.
 ३. शास्त्र विरुद्ध बोलना.
 ४. सूत्र या सिद्धांत के पाठ को संक्षिप्त करके बोलना.
 ५. कलहकारी वचन बोलना.
 ६. विकथा झूठी, आहार, देश या राज कथाट करना.
 ७. किसी की हँसी उड़ाना या हँसना.
 ८. सूत्र या सिद्धांत के पाठ का अशुद्ध उच्चारण करना.
 ९. निश्चयात्मक वचन बोलना.
 १०. सामायिक में गुनगुनाना.

◆ काया के बारह दोष :-

१. पांव पर पांव रखकर अयोग्य आसन में बैठना.

5. To perform **sāmāyika** out of fear.
 6. To determine worldly gains by performing **sāmāyika**.
 7. To doubt the fruits of **sāmāyika**.
 8. To get angry during **sāmāyika** or to perform **sāmāyika** with anger.
 9. To perform **sāmāyika** without faith or with immodesty.
 10. To do **sāmāyika** without due respect, without proper devotion or without proper enthusiasm.

◆ Ten faults of speech :-

1. To speak harsh, unpleasant or untrue words.
 2. To speak without thinking.
 3. To speak against the teachings of scriptures.
 4. To speak the lessons of **sūtra** or principles making short.
 5. To speak quarrelsome words.
 6. To discuss unbeneficial stories [stories of women, food, countries or politics.]
 7. To ridicule any body or to laugh at others.
 8. To pronounce incorrectly the lessons of the **sūtra** or principles.
 9. To speak decisive words.

सूत्र

२. आसन अस्थिर रखना.
३. चारों तरफ देखते रहना.
४. सावद्य क्रिया करना या कराना.
५. दिवाल या स्थंभ आदि का सहारा लेकर बैठना.
६. हाथ पांव का संकोचन या प्रसारण करना.
७. आलस मरोड़ना.
८. शरीर या हाथ-पांव की उंगलियों के कड़ाके फोड़ना.
९. शरीर पर से मैल उतारना.
१०. सामायिक में नींद लेना.
११. शरीर पर खुजली खुजलाना.
१२. शरीर को ढंककर बैठना.

सूत्र परिचय :-

इस सूत्र में सामायिक व्रत की महिमा बताई गई है. सामायिक करने वाला श्रावक जब तक सामायिक में रहता है, तब तक वह मुनि तुल्य कहा जाता है. इसलिए पवित्र चारित्र धर्म की आराधना के लिए एवं पुनः पुनः सामायिक करने की भावना को स्थायी बनाने के लिए सामायिक पूर्ण करते समय यह सूत्र बोला जाता है.

10. To hum in sāmāyika.

◆ Twelve faults of the body / activities :-

1. To sit in an improper manner keeping the legs one above another.
2. To keep the seat unsteady.
3. To be looking around.
4. To do or cause others to do sinful activities.
5. To sit taking the support of a wall or a pillar.
6. To contract or spreadout hands and legs.
7. To express idleness.
8. To crack the body or fingers of hands and legs with crackling sound.
9. To remove dirt from the body.
10. To sleep / doze in sāmāyika.
11. To itch skin of the body.
12. To sit covering the body.

Introduction of the sūtra :-

In this sūtra, the greatness of the sāmāyika vow is shown. As long as śrāvaka, the performer of sāmāyika is in sāmāyika, till then he will be equivalent to a saint.

सूत्र

Therefore, this **sūtra** is uttered while completing **sāmāyika** to adore the sacred characteristic duties and to maintain the enduring wish of performing the **sāmāyika** again and again.

१. नवकार महामंत्र	१
1. navakāra mahāmantra	1
२. पंचिंदिय सूत्र	१६
2. pañcindiya sūtra	16
३. खमासमण सूत्र	२४
3. khamāsamaṇa sūtra	24
४. इच्छकार सूत्र	२८
4. icchakāra sūtra	28
४ अ. अब्भुट्ठिओमि सूत्र	३१
4 A. abbhuṭṭhiomi sūtra	31
५. इरियावहिया सूत्र	३५
5. iriyāvahiyā sūtra	35
६. तस्स उत्तरी सूत्र	४२
6. tassa uttarī sūtra	42
७. अन्नत्थ सूत्र	४५
7. annattha sūtra	45
८. लोगस्स सूत्र	५२
8. logassa sūtra	52

९. करेमि भंते सूत्र	६१
9. karemi bhante sūtra	61
१०. सामाइय-वय-जुत्तो सूत्र	६५
10. sāmāiya-vaya-jutto sūtra	65